

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

(तर्ज : आज हरि आये विदुर घर पावना...)

आज गणपति आये, हमारे घर आंगना,
नाचो गाओ खुशी मनावो, हुआ है ये घर पावना ।

महादेव के पुत्र लाडले, पार्वती के प्यारे जी,
करूँ वन्दना लम्बोदर की, हरपल करूँ मैं ध्यावना ॥१॥

बुद्धि के भण्डार विनायक, देवन में अगुआ हैं जी,
सबसे पहल्याँ पूजा थारी, लागै बड़ी सुहावना ॥२॥

सुण्ड-सुण्डाला, दुन्द-दुन्दाला, एकदन्त है साजे जी,
रिद्धि-सिद्धि थारै चँवर ढुलावे, मोदक है मनभावना ॥३॥

जो भी साँचि मन से ध्यावे, उसका कारज सारे जी,
'रेनु' की बस यही प्रार्थना, हृदय में बस जाओ ना ॥४॥

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

गौरी नन्दन थारो अभिनन्दन, करे सारो परिवार
गजानन्द आज पधारो, लडावाँ लाड म्हे थारो ।

बल और बुद्धि को तो थारो भण्डार है
तीना लोकां में पहलां थारो अधिकार है
थारी पूजा सबसे पहले, करे सारो संसार...गजानन्द...

विघ्नविनाशक सारी विपदा मिटाओ
रिद्धि-सिद्धि सागे लेकर म्हारे घरां आओ
काम कोई भी करने से पहले, पड़े थारी दरकार...गजानन्द

चन्दन की चौकी पर थानै बिठावाँ
तिलक लगावाँ सोणो हार चढ़ावाँ
मोदक लड्डुवाँ को भोग लगावाँ, कर लीजो स्वीकार...गजानन्द

श्याम लिओ परिवार की याही है विनती
काज सफल करदयो, दीज्यो थे सुमति
बेगा-बेगा आओ लम्बोदर, कराँ थारी मनुहार...गजानन्द

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

(तर्ज : देना है तो दीजिये...)

प्रथम निमंत्रण आपको, माँ गौरी के लाल
श्याम धणी का उत्सव है, आ जाओ तत्काल ।

आपके आने से ही देवा, काम सभी बन जायेंगे
सभी देवता झूट से अपने, आसन पर आ जायेंगे
चरण पखारूँ आपके, तिलक लगाऊँ भाल ।

मुसे की असवारी कर, रणत भवन से आयेगें
कंचन थाल में लड्डू भर हम, आपको भोग लगायेगें
संकट हारी देवा, मेरे संकट देना टाल ।

एक दंत और दयावंत, तेरे हाथ में फरसा भारी है
पहले सुमिरन आपका करते, इस जग के नर-नारी हैं
जो भी ध्यान धरे है तेरा, प्रभुवर रखना ख्याल ।

कोई विघन नहीं आता जहाँ, विघ्नेश्वर आ जाते हैं
रिद्ध-सिद्ध शुभ-लाभ और लक्ष्मी, उस घर में आ जाते हैं
मन्नर की विनती है प्रभु, रखना हरदम ख्याल ।

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

म्हारा प्यारा रे गजानन्द आइज्यो
रिद्ध-सिद्ध न सागै लाइज्यो जी ।

थाने सबसे पहल्याँ मनावॉ
लडुवन को भोग लगावॉ
थे मुसे चढ़कर आइज्यो जी । म्हारा

माँ पार्वती का प्यारा,
शिवशंकर लाल दुलारा
थे बाँध पागड़ी आइज्यो जी ।

थे रिद्ध-सिद्ध का दातारी
थाने ध्यावे दुनिया सारी
म्हारा अटक्या काज बणाइज्यो जी ।

‘श्याम लिओ परिवार’ गुण गावे
थारे चरणां म शीश नवावे
म्हारी नैया पार लगाइज्यो जी ।

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

(तर्ज : सावन का महीना...)

रणत भवन से आवो, ऋद्धि सिद्धि रा दातार,
संकटहारी हो रही थारी, जग में जय जयकार ॥

मां जगदंबा अम्बा लाड लडायो,
पालणे झुलायो थानै, गोद में खिलायो,
शिव शंकर भोला को, थे पायो घणो दुलार ॥

दूंद दुंदालो देवा सूंड सुंडालो,
काम पड्या पर बनै है रुखालो,
दुमक-दुमक कर नाचै, है पायल की झंकार ॥

मोदक प्रिय थारो मंगल दाता,
प्रथम मनावे उसका भाग्य विधाता,
“मित्र मण्डल” है थारो, थे देवां रा सरदार ॥

॥ श्री पितरेश वन्दना ॥

(तर्ज : प्रेम भरी आवाज साँवरो...)

करुणा मेरी सुनके पितरजी, जल्द पधारो जी ।

भीर पड़ी थारे टाबरिया पे, आन उबारो जी ।

चहूँ दिशा फैल्यो अंधियारो, कुछ न देवे दिखाई,
थक कर हार गयो मैं पितरजी, अब तो करियो सहाई,
था बिन अटक्या कारज सारा-२ आके साँवारोजी ॥१॥

हर सुख और हर दुःख में देवा, म्हेँ तो थानै ध्यांवा,
मावस न थारे धोक लगांवा, प्रेम सूँ थानै मनावां,
जाने-अनजाने हुई गलती नै-२, मति विचारो जी ॥२॥

थानै सौंप दियो है देवा, यो थारो परिवार,
रक्षा करनी थारो हाथ में, रखियो सार-सम्हार,
थाँपर दारमदार है सारो-२ थारो ही सहारो जी ॥३॥

थारी आस लगाया देवा थारी बाट म्हेँ जोवां,
चिन्ता हरो, पीड़ा न, हुकम सुनाओ देवा,
'रेनु' पितरां की जय बोले जय जयकार लगावो जी ॥४॥

॥ श्री पितरेश वन्दना ॥

(तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार...)

जय जय पितरजी महाराज, थारी बोलां जय-जयकार
मन स ध्यावां, मनावां, म्हारो कर द्यो बेड़ा पार ।

नित उठ थारो देवा, ध्यान लगावां
लाड़ लड़ावां थाने हाल सुनावां
सुणज्यो म्हारी थे पुकार, टाबर बैठा भुजा पसार ।

बेगा सम्भालो आओ, देर ना लगावो
बांट निहारां थारी दरश दिखाओ
म्हानै थारो ही आधार, थारै बिण कुण खेवनहार ।

देव हो दयालु थे तो बड़ा दिलवाला
आश लगाकर बैठ्या बनो रखवाला
शिन न थारी है दरकार, सौपी थानै ही पतवार ।

॥ श्री पितरजी वन्दना ॥

(तर्ज : खादू को श्याम रंगीलो जी...)

पितरां की शान निराली जी, पितरां की
पितरां की सकलाई ठाडी
घर-घर मायँ रुखाली जी, पितरां की, कोई घर...

घर मैं द्यो पितरां ने वासो
पिण्डै मांहि दिवलो चासो
ज्योति बड़ी महरां वाली जी, पितरां की, कोई ज्योत...

पितरां को है वास सुहाणो
पितरां नै नहीं कदै भुलाणो
पूजा सुख देणै वाली जी, पितरां की, कोई पूजा...

पितरां नै थे मन से पूजो
'रवि' कहै नहीं इनसो दूजो
आशीष जाय न खाली जी, पितरां की, कोई आसीष..

॥ श्री पितर वन्दना ॥

दोहा : हे पितरेश्वर आपको म्हें चावां आशीर्वाद
चरणां शीश नवा दियो, रखदयो सिर पर हाथ

सबसे पहल्या गणपत पाछ, घर का देव मनाव जी ।
हे पितरेश्वर दया राखियो, करियो मन की चाया जी ॥

गल पुष्पन को हार पहरायो, चरणां फूल चढ़ाया जी,
श्रद्धा पूर्वक हाथ जोड़कर, थारो ध्यान लगाया जी ।
सबसे पहल्या गणपत...

सुख-दुख म्हारो जो भी होसी, म्हें तो थान कहस्यां जी,
हरदम थारी महिमा गास्यां, थारी शरण में रहस्यां जी ।
सबसे पहल्या गणपत...

थे हो म्हार घर की ज्योति, टाबर का रखवाला जी,
'बनवारी' चाहे जो हो जावे, थारो हुकुम नहीं टाला जी ।
सबसे पहल्या गणपत...

॥ श्री गुरु वन्दना ॥

(तर्ज : फूल तुम्हें भेजा है खत में...)

गुरुदेव श्री गुरुदेव के चरणों में शत् शत् प्रणाम है,
सभी कहते हैं, गोविन्द से भी गुरु का ऊँचा स्थान है ।

गुणगान करें हम किस विध इनका, वाणी में इतने शब्द नहीं,
सूरज को क्या रोशन करिए, इतनी तो क्षमता ही नहीं,
गुरु सम देव नहीं कोई दूजा, हमें बड़ा ही मान है ॥१॥

भटक रहा था अंधियारे में, बिन उद्देश्य और बिन आधार,
आप मिले तब थामी गुरुवर, हम सबकी जीवन पतवार,
श्याम मिलन की राह बताई, दूर किया अज्ञान है ॥२॥

धन्य हुए हम आपको पाकर, सफल हुआ ये जीवन है,
एक प्रार्थना और है गुरुवर, दया की दृष्टि हरदम रहे,
चरणों में तेरे ऐ श्री गुरुवर, कर दिया 'रेनु' ने समर्पण है ॥३॥

॥ श्री गुरु वन्दना ॥

दोहा - गुरु मुरत सुख चन्द्रमा सेवक नैन चकोर ।

अष्ट प्रहर निरखत रहूँ गुरु मूरति की ओर ॥

छोटी-सी अरदास गुरुजी चरणां में पड़ी ।

लगा के श्याम से अरदास मीटाद्यो संकट की घड़ी ।।टेर।।

सारै जग में भटक्यायो पर सुणी ना कोई बात ॥

थारै आगै अर्ज करां म्हे जोड़ा दोनूँ हाथ ।

म्हारी अभिलाषा न पूरी करद्यो अब की घड़ी ॥१॥

गिरतो पड़तो ठोकर खातो थारै द्वारै आयो ।

काम मेरो छोटे सो गुरुजी करद्यो मन को चायो ॥

म्हार रखद्यो सिर पर हाथ लेकर मोर की छड़ी ॥२॥

ऐसो द्यो वरदान गुरुजी नित उठ मौज उड़ावाँ ।

फागण क मेल पर बाबा श्याम का दर्शन पावाँ ॥

म्हार घर में लगाद्यो अब तो प्रेम की झड़ी ॥३॥

सेवक पालीराम थार चरणां शीश नवाव ।

ऐसी छाप लगाद्यो गुरुजी किस्मत पलटी जाव ।

म्हारी पार लगा द्यो नैया थारे भरोस पड़ी ॥४॥

॥ श्री गुरु वन्दना ॥

(तर्ज : कुण सुणलो कीणे सुनावां...)

अभी भी समय है, गुरु को मनाले ।

गुरु को मनाले अपने प्रभु को रिझाले ।

चरण थाम इनके अपने भाग्य जगाले ।। ८ ।।

इनकी दया की सीमा नहीं है ।

रस्ता उजागर भी धीमा नहीं है ।

तू आँखों से अपनी परदा हटाले ।। ९ ।।

गुरुदेव से मुँहमांगा है मिलता ।

मन मूढ़ फिर क्यों सस्ता तू लेता ।

दुर्लभ की खातिर अर्जी लगादे ।। १० ।।

चला आ शरण में, मिटाने हो गर दुःख ।

इन चरणों में तो बस सुख ही है सुख ।

अगर चल न पाये तो खिसक के ही आले ।। ११ ।।

सब तीर्थ प्रभू जी के, चरण में बसे हैं ।

चरण वो गुरुजी के मन में बसे हैं ।

इन्हें छू के तू सभी तीर्थ नहाले ।। १२ ।।

अगर तुझमें कुछ भी लियाकत नहीं है ।

निश्चय भी करने की, ताकत नहीं है ।

बचालो गुरुजी मुझको, इतना तो कह दे ।। १३ ।।

॥ श्री गुरु वन्दना ॥

(तर्ज : एक तेरा साथ हमको...)

ले गुरु का नाम बन्दे, ये ही तो सहारा है ।

ये जग का पालनहारा है, ले गुरु का नाम ॥टेर॥

तारीफ क्या करूँ, इस दीन दाता की, दयालु नाम है ।

दीन दुखियों के, दामन को भर देना, गुरु का काम है ।

लाखों की तकदीर-२ को इस मालिक ने संवारा है ॥१॥

क्या भरोसा है, इस जिन्दगानी का, गुरु को याद कर ।

क्या सोचता है, अनमोल जीवन को, ना तूँ बर्बाद कर ।

सौंप दे पतवार-२ फिर तो पास में किनारा है ॥२॥

कौन है तेरा, क्या साथ जाएगा, गुरु का ध्यान कर ।

व्यर्थ है काया, धोखे की है माया, गुरु से पहचान कर ।

‘हीरा’ तूँ नादान-२, तूने गुरु को क्यों बिसराया है ॥३॥

॥ भजन ॥

मात, पिता, गुरु, प्रभु चरणन में प्रणवत बारम्बार
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार ॥

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाय चुकाया
अँगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया
जिनकी गोदी में पलकर हम, कहलाते हुशियार ।
हम पर किया...

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया
पढ़ा-लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार ।
हम पर किया...

तत्त्व ज्ञान गुरु ने दर्शाया, अंधकार सब दूर हटाया
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बताया
बिन स्वार्थ ही कृपा करे ये, कितने बड़े हैं उदार ।
हम पर किया...

प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया
जो भी इनकी शरण में आता कर देते उद्धार ।
हम पर किया...

॥ श्री सरस्वती वन्दना ॥

(तर्ज : महाराज गजानन दयाकरो...)

माँ सरस्वती तुम दया करो ।

गुण ज्ञान का माँ भण्डार भरो ॥

हम मूर्ख और अज्ञानी है,

विद्या हमसे अंजानी है ।

विद्या-बुद्धि का दान करो । माँ...

हे, हँस-वाहिनी आ जावो,

शिक्षा का पाठ पढ़ा जावो ।

हम बच्चों का उद्धार करो ॥ माँ...

कर पुस्तक तेरे विराजै है,

इक कर में वीणा साजै है ।

सुर और लय की झुँकार भरो ॥ माँ...

हम नेक डगर पे बढ़ जायें,

बुरे कर्मों से टल जायें ।

सतकर्मों का संस्कार भरो ॥ माँ...

ये दास 'रवि' गुण गाता है ।

चरणों में शीश झुकाता है ।

ममता का सिर पे हाथ धरो ॥ माँ...

॥ श्री सरस्वती वन्दना ॥

(तर्ज : फूल तुम्हें भेजा है खत में...)

हे स्वर की देवी माँ वाणी में मधुरता दो
मैं गीत सुनाती हूँ संगीत की शिक्षा दो ।

सरगम का ज्ञान नहीं ना लय का ठिकाना है
तुम्हें आज सभा में माँ हमें दरस दिखाना है
संगीत समन्दर से सुर-ताल हमें दे दो ।

शक्ति ना भक्ति है सेवा का ज्ञान नहीं
तुम्हें आज सुनाने को कोई सुन्दर गान नहीं
गीतों के खजानों से एक गीत हमें दे दो ।

॥ श्री राम वन्दना ॥

(तर्ज : क्या मिलिए ऐसे लोगों से...)

आओ बसाएँ मन-मन्दिर में झाँकी सीताराम की
जिसके मन में राम नहीं वो काया है किस काम की ।

गौतम नारी अहिल्या तारी श्राप मिला अति भारी था
शिला रूप से मुक्ति पाई चरण राम ने डाला था
मुक्ति मिली तब वो बोली जय-जय सीताराम की ।

जिसके...

जात-पांत का तोड़ के बन्धन शबरी मान बढ़ाया था
हँस-हँस खाते बेर प्रेम से राम ने ये फरमाया था
प्रेम भाव का भूखा हूँ मैं चाह नहीं किसी चाम की ।

जिसके...

सागर में लिख राम-नाम नल-नील ने पत्थर तैराये
इसी नाम से हनुमान जी सीता मैया की सुध लाये
भक्त विभीषण के मन में तब ज्योति जागी श्री राम की ।

जिसके...

॥ श्री रामचन्द्र वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल..)

झाँकी आईजी, श्री रामचन्द्र की, मनड़े भाईजी,
झाँकी आईजी ।

मनड़े भाई, मनड़े भाई मनड़े भाईजी,
झाँकी आईजी ॥

राम प्रभु कै चरणां माही, हनुमान जी बैठ्या है ।
सागै लक्ष्मण-भरत-शत्रुघन, सीता माईजी ॥
झाँकी आईजी ॥

एक साल मैं एक बार ही, ऐसो मोको आवै जी ।
सजधज कर कै निकल्या देखो, श्री रघुराई जी ॥
झाँकी आईजी ॥

नौ दिन की रामायण पाछै, आज सवारी निकली जी ।
टाबरिया कै सागै आया, लोग लुगाई जी ॥
झाँकी आईजी ॥

‘सेवा संघ’ की टोली देखो, मगन होयकर गावै जी ।
‘रवि’ नयन मैं आज प्रभु की, छवि बसाई जी ॥
झाँकी आईजी ॥

॥ श्री राम वन्दना ॥

(तर्ज : नगरी नगरी द्वारे द्वारे...)

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया ।

रघुकुल नंदन कब आवोगे, भिलणी की डगरिया ॥

मैं भिलनी सबरी की जाई, भजन भव नहीं जानूँ रे ।

राम तुम्हारे दरसन के हित, वन में जीवन काटूँ रे ।

चरण कमल से निर्मल कर दो, दासी की झुंपड़िया ॥

रोज सवेरे वन में जाकर, रास्ता साफ कराती हूँ ।

अपने प्रभु के खातिर वन से, चुन चुन के फल लाती हूँ ।

मीठे मीठे बेरन की भर, ल्याई मैं छबड़िया ॥

सुन्दर श्याम सलोनी सूरत नैनो बीच बसाऊँगी ।

पद पंकज की रज धर मस्तक, चरणों में सीस नवाऊँगी ।

प्रभुजी मुझको भूल गये क्या, दासी की खबरीया ॥

नाथ तुम्हारे दरशनके हित, मैं अबला एक नारी हूँ ।

दरसन बिन दोऊ नैना तरसे, दिलकी बड़ी दुख्यारी हूँ ।

मुझको दरसन देवो रामा, डालो म्हारे नजरिया ॥

॥ श्री राम वन्दना ॥

हो सिर पे मुकुट सजे मुख पे उजाला
हाथ में धनुष गले में पुष्प माला
हम दास इनके ये सबके स्वामी
अन्जान हम ये अन्तरयामी
शीश झुकाओ राम गुन गाओ
बोलो जय विष्णु के अवतारी

राम जी की निकली सवारी, राम जी की लीला है न्यारी ।
एक तरफ लक्ष्मण एक तरफ सीता, बीच में जगत के पालनहारी ।

धीरे चला रथ ओ रथ वाले, तोहे खबर क्या ओ भोले-भाले
इक बार देखो जी ना भरेगा, सौ बार देखो फिर जी करेगा
व्याकुल पड़े है कब से खड़े है, दरसन के प्यासे सब नर-नारी । राम...

चौदह बरस का बनवास पाया, माता-पिता का वचन निभाया
धोखे से हर ली रावण ने सीता, रावण को मारा लंका को जीता
तब-तब ये आये तब-तब ये आये
जब-जब दुनिया इनको पुकारी...
राम जी की...

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

वीर बाँके सुघड़ अन्जनी के कुँवर आ पधारो
नाम संकट हरण है तिहारो ।

चिन्ता सुग्रीव की दी मिटाई, मित्रता रामजी सो कराई
बालि को वध कियो राज्य पम्पा दियो ले सहारो ॥ नाम...

बालापन में ये कौतुक किया था, सूर्य को तुमने मुख में लिया था
देव विनती करी अंधियारी हरी कर उजारो ॥ नाम...

सीता सुधि में प्रशंसा तुम्हारी दुष्ट रावण की लंका जारी
देख सीता को दुख दुष्ट रावण विमुख तुमने भारी ॥ नाम...

भक्त जन यश तुम्हारो गावें, चरणन में ही शीश झुकावे,
अब ना देरी करो कष्ट सारे हरो, भव से तारो ॥ नाम...

वीर बाँके सुघड़ अन्जनी के कुँवर आ पधारो
नाम संकट हरण है तिहारो ॥

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : श्याम ने दिया...)

छम छम नाचे देखो वीर हनुमाना,
कहते हैं लोग इसे राम का दीवाना ।
राम-राम सिया राम, राम-राम सिया राम ॥

पाँव में घूँघरूँ बांध के नाचै,
राम जी का नाम इसे प्यारा लागै ।
राम ने भी देखो इसे खूब पहचाना ॥
छम छम...

जहां जहां कीर्तन होता श्री राम का,
लगता है पहरा वहां वीर हनुमान का ।
राम के चरण में है इनका ठिकाना ॥
छम छम...

नाच नाच देखो श्री राम को रिझाए,
'बनवारी' रात दिन नाचता ही जाए ।
भक्तों में भक्त बड़ा दुनिया ने माना ॥
छम छम...

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : खाटू के श्याम रंगीलो...)

अंजनी को लाल निरालो रे, अंजनी को ॥

घुँघरु बाँध बालो छम-छम नाचै-२
लाल लंगोटे वालो रे, अंजनी को...

रोम-रोम में राम रमैयो-२
राम नाम मतवालो रे, अंजनी को...

भीड़ पड़्या यो दोड़्यौ दोड़्यौ आवे-२
भगतां रो रखवालो रे, अंजनी को...

“राम अवतार” राम भज प्यारे-२
भजले बजरंग बालो रे, अंजनी को...

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

दुनिया चले ना श्रीराम के बिना ।

रामजी चले ना हनुमान के बिना ॥

जब से रामायण पढ़ली है,

एक बात मैंने समझ ली है,

रावण मरे ना श्रीराम के बिना,

लंका जले ना हनुमान के बिना ॥ दुनिया

लक्ष्मण का बचना मुश्किल था,

कौन बूँटी लाने के काबिल था,

लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना,

बूँटी मिले ना हनुमान के बिना ॥ दुनिया

सीता हरण की कहानी सुनो,

‘बनवारी’ मेरी जुबानी सुनो,

वापस मिले ना श्रीराम के बिना,

पता चले ना हनुमान के बिना ॥ दुनिया

बैठे सिंहासन पर श्रीरामजी,

चरणों में बैठे हनुमान जी,

मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना,

भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ॥ दुनिया

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : ओ राधा म्हाने..)

दोहा : लाल देह लाली लसे, अरुधर लाल लंगूर ।

वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपी शूर ॥

उठे तो बोले राम, बैठे तो बोले राम ।

देखो राम भक्त हनुमान, बोले राम राम राम ॥ टेर ॥

बालासा म्हारै कीर्तन में आवोजी ।

एक बार थे आ जाओ म्हें धोक लगावां जी ॥

अंकै नैणा मांही राम, अंकै हिरदे मांही राम ।

अंकै रोम रोम में राम, बोले राम राम राम ॥ १ ॥

चरणां की धूलि, एकबर पावां जी ।

श्री राम के प्यारे, भव से तर जावां जी ॥

अंकै राम नाम की भक्ति, अंकै राम नाम की शक्ति ।

अंकै राम शरण में धाम, बोले राम राम राम ॥ २ ॥

सिया रामजी से म्हानै मिला द्यो जी ।

भक्तां के संग मिलकर, नाचां और गावां जी ॥

कोई भक्त नहीं है ऐसो, श्री हनुमान के जैसो ।

गावे भक्त सभी गुणगान, बोले राम राम राम ॥ ३ ॥

॥ श्री हनुमत वन्दना ॥

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादान)

ना स्वर है ना सरगम है, न लय ना तराना है,
हनुमान के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है ॥ टेर ॥

तुम बाल रूप में प्रभु, सूरज को निगल डाले,
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले,
बजरंग हुये तब से, संसार ने माना है ॥

ना स्वर... ॥ १ ॥

सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम,
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम,
प्रिय भरत सरिस तुमको, श्रीराम ने माना है ॥

ना स्वर... ॥ २ ॥

जब राम नाम तुमने, पाया न नगीने में,
तुम फाड़ दिये सीना, सिया राम थे सीने में,
विस्मित जग ने देखा, कपि राम दीवाना है ॥

ना स्वर... ॥ ३ ॥

हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी,
ये दीन हीन 'चंचल' अभिमानी अज्ञानी,
तुमने जो नजर फेरी, मेरा कौन ठिकाना है ॥

ना स्वर... ॥ ४ ॥

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : देर हो सकती है...)

हनुमान को खुश करना, आसान होता है ।

सिन्दूर चढ़ाने से, हर काम होता है ॥

करले भजन दिल से, हनुमान प्यारे का,

जिसको भरोसा है, अंजनी दुलारे का,

वहां आनन्द है जहां इनका, गुणगान होता है ॥

सिन्दूर...

हनुमान के जैसा, कोई देव ना दूजा,

सबसे बड़ी जग में, हनुमान की पूजा,

वो घर मंदिर जहां इनका, सम्मान होता है ॥

सिन्दूर...

श्री राम के आगे पूरा जोर है इनका,

‘बनवारी’ दुनियां में, अब शोर है इनका,

जो मुख मोड़े हनुमत से, परेशान होता है ॥

सिन्दूर...

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : मणिहारी का वेश बनाया...)

श्री राम की गली में तुम जाना,
वहाँ नाचते मिलेंगे हनुमाना ॥ टेर ॥

उनके तन में है राम उनके मन में है राम,
अपनी आँखों से देखे वो कण-कण में राम,
श्री राम का वो हो गया दीवाना ॥

वहाँ नाचते... ॥ १ ॥

ऐसे रामजी से जोड़ लिया नाता,
जब भी देखो उन्हीं के गुण गाता,
श्री राम के चरण में ठिकाना ॥

वहाँ नाचते... ॥ २ ॥

उनसे कहना राम-२, वो कहेंगे राम-राम,
कुछ भी सुनते नहीं बस सुनेंगे राम-राम,
महामंत्र है ये भूल नहीं जाना ॥

वहाँ नाचते... ॥ ३ ॥

इतनी भक्ति वो “बनवारी” करने लगे,
उसके सीने में राम सिया रहने लगे,
इस कहानी को जानता जमाना ॥

वहाँ नाचते... ॥ ४ ॥

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...)

हे दुःख भंजन, मारुती नन्दन, राम भक्त हनुमान,
भरोसा तेरा है ॥ टेर ॥

माँ सीता का हरण हुआ, राम बड़े अकुलाये थे,
लाँघ समन्दर आप गये, माता की सुध लाये थे,
लाय संजीवन तुरन्त बचाये, लक्ष्मण जी के प्राण ॥ १ ॥

जिसके सिर पे हाथ तेरा, भला उसे फिर डरना क्या,
जिसे भरोसा तेरा है, और उसे फिर करना क्या,
बाल ना बांका करने पाये, बड़े-बड़े तूफान ॥ २ ॥

त्रेता राजा राम का था, द्वापर था गोपाल का,
हर युग डंका बजता रहा, माँ अंजनी के लाल का,
चारों युग प्रताप तुम्हारा, बजरंगी बलवान ॥ ३ ॥

बल-बुद्धि का दाता तू, मेरा भाग्य विधाता तू,
“हर्ष” पड़े जब भी विपदा, पल में दौड़ा आता तू,
भक्त शिरोमणी सदा बचाये, अपने भगत की आन ॥ ४ ॥

॥ श्री हनुमान वन्दना ॥

लहर लहर लहराये रे, झंडा बजरंगबली का ।

बजरंगबली का रामा, बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

लंका जाय जराई रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

माता की सुधि लाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

संजीवन लेकर आये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

लक्ष्मण के प्राण बचाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

सीता राम मिलाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

भूतों को मार भगाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

भक्तों की लाज बचाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

नैया पार लगाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

इस झंडे को हाथ में लेकर, हाथ में लेकर रामा साथ में लेकर ।

रतनगढ़ शुभ धाम तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा ।

संकट सकल मिटाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

जो कोई झंडा प्रेम से गावे, वास तुम्हारे बाबा चरणों में पावे ।

भक्ति प्रेम बढ़ाये रे, झंडा बजरंगबली का ॥ लहर... ॥

॥ श्री शिव वन्दना ॥

(तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर..)

शरण में तुम्हारी आये त्रिपुरारी ।
दया कर दयाकर, भोले भण्डारी ।

ऊँचे पर्वत वास तुम्हारा, माँ गौरा को लगते हैं प्यारा,
धीर गम्भीर तुम हो, लोक हितकारी ॥ १ ॥

तेरी जटा में गंगा विराजे, मस्तक पर चन्दा है साजे,
बाघम्बर धारी और डमरुधारी ॥ २ ॥

भांग धतुरा तुमको हैं भाये, तन पर रखते हो भस्मी रमाये,
नीलकण्ठ नाम तेरा बोले दुनिया सारी ॥ ३ ॥

औघड़दानी और वरदानी, हाथ कृपा का सिर पर रख दो स्वामी,
नैया लगाओ पार, 'रेनु' की दातारी ॥ ४ ॥

॥ श्री शिव वन्दना ॥

हरि ॐ नमः शिवाय...हरि...ॐ... नमः शिवाय

तेरी जटा में गंग विराजे, माथे पे चन्दा साजे

और डम-डम डमरु बजाये ॥

हरि ... ॥ १ ॥

तेरी लीला है सब से न्यारी, जिसे जाने दुनिया सारी,

तेरी महिमा वरनी ना जाये ॥

हरि ... ॥ २ ॥

वो अंग विभूति रमाये, नित भांग धतूरा खाये,

श्री राम का ध्यान लगाये ॥

हरि ... ॥ ३ ॥

ये 'पवन' तेरा गुण गाये, तेरे चरणों में शीश नवाये,

गुणगाण करे चित लाये ॥

हरि ... ॥ ४ ॥

॥ श्री शिव वन्दना ॥

(तर्ज : बीरा बेगा थे आईज्यो...)

भोला गौरां जी कै सागै आईज्यो ।

भक्तां नै दरश दिखाईज्यो जी ॥टेर ॥

म्हे कंद मूल-फल ल्याया ।

बाबा थारै भोग लगाया ।

आके भांग, धतूरा खाईज्यो जी ॥ भोला...

मृग छाला ल्याया म्हे तो ।

अब आय बिराजो थे तो ।

भोला अंग भभूति रमाईज्यो जी ॥ भोला...

भोला द्वार तिहारे आया ।

म्हे दर्श की आशा ल्याया ।

भक्तां की आश पुराईज्यो जी ॥ भोला...

‘सेवा संघ’ शीश नवावै ।

‘रवि’ थासूँ अरज लगावै ।

भगतां की बिगड़ी बणाईज्यो जी ॥ भोला...

॥ श्री शिव वन्दना ॥

(तर्ज : एक परदेशी मेरा दिल ले गया..)

सावन का महिना प्यारा प्यारा आया है ।
पुरवईया का झोंका अपने साथ लाया है ॥

सावन का महिना शिव भोलेजी के नाम हैं
लाखों ही भगत चलके जाते इनके धाम हैं
कावड़ियों से बोल बम बुलवाने आया है, ॥ पुरवईया...

सावन में कोयलिया भी मीठे गीत गाती है
सृष्टि को झूमाती संग मोर को नचाती है
बादल भी घटायें बरसाने आया है, ॥ पुरवईया...

सावन में ही आते सारे तीज त्योहार हैं
कहता 'रवि' भी बंधे भाई-बहन का प्यार है
आपस के ये रिश्ते निभाने आया है, पुरवईया...

॥ श्री शिव वन्दना ॥

तेरे ख्यालों में खोई रहूँSS जागूँ दिन और रातSS
आओ आ जाओ भोले नाथ ।।टेर ।।

हे शिवशंकर हे प्रलयकर हे जग के रखवालेSS
तेरे बिन मेरी कौन सुनेगा-२
दर्दे दिल की बातSS ।। १ ।।

मन पंछी बैचेन दरश बिन, अब तो दरश दिखाओ,
अंखियां ऐसे बरस रही हैं-२, सावन की बरसातSSS
आओ SSSS ।। २ ।।

विष पिये खुद अमृत बाँटे तुम-सा न कोई दानी,
'बेटी' दया की भिक्षा मांगे-२,
रख दो सिर पर हाथ SSS ।। ३ ।।

॥ श्री शिव वन्दना ॥

(तर्ज : मेरी प्यारी बहनिया बनेगी दुल्हनिया...)

ओ मेरी प्यारी सी गौरा बनेगी दुल्हनिया,

ओ सज के आएंगे दूल्हा भोले बाबा,

ब्रह्मा, विष्णु बजाएंगे बाजा...२ ॥

सोलह श्रृंगार मेरी गौरा करेगी,

हल्दी चढ़ेगी और माँग भरेगी,

गौरा के होठों पे सजेगी नथनिया,

और झूमेंगे भाले बाबा, ब्रह्मा, विष्णु...॥१॥

बाजा बजेगा और डमरू, बजेगा

शंकर मेरा भोला देखो खूब सजेगा,

नौ लाख संग में बाराती सजेंगे,

शुक्र शनिचर भरेंगे भण्डारा, ब्रह्मा, विष्णु...॥२॥

लाल-लाल चुनरी में गौरा सजेगी,

आगे-आगे भोला पीछे गौरा चलेगी,

गौरा के पाँव में बजेंगी पैजनियां,

और झूमेंगे भोले बाबा, ब्रह्मा विष्णु...॥३॥

सज धज के मेरी गौरा खड़ी है,

डोली मंगवा दो बड़ी शुभ की घड़ी है,

माता की आँखों से बहेगी जल धारा,

और खुश होंगे भोले बाबा, ब्रह्मा, विष्णु...॥४॥

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : आने से उसके आये बहार...)

मन में म्हारे हर्ष अपार,
मैया थारो सज्यो है दरबार,
दादी माँ पधारो जी, म्हारे कीर्तन में,
सती माँ पधारो जी, आज कीर्तन में ।

बन सँवर के बैठी, लाल चूड़ो और चुनड़ी पहनके,
हाथां में है मेंहदी, माथे कुमकुम को टीको है दमके,
ममतामयी रूप तेरा, लागे घणो प्यारो जी,
आज कीर्तन में....॥१॥

ये हैं जग की जननी, अपने बच्चों को हरदम निभाती,
कोई भी हो मुशिकल, मैया पलभर में दूर हटाती,
करुणाभरा हाथ थारा, म्हारे माथे राखो जी,
आज कीर्तन में...॥२॥

जनम-जनम से ओ मैया, म्हे हाँ थारा दरस का प्यासा,
आज तो पुरादयो दादी छोटी-सीया अभिलाषा,
थारे बिन कुण म्हारो, 'रेनु' ने अपनाओ जी,
आज कीर्तन में...॥३॥

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : अपने पिया की...)

आओ जी आओ म्हारी मैया ने रिझावाँ
भजन सुनावां माँ का गुण गावाँ । म्हारी मैया नै रिझावाँ

चाँदी के सिंहासन उपर बैठी महारानी है
हाथां या त्रिशुल सोहे सिंह की सवारी है
जोत जगावाँ दरसन पावाँ...मैया-२ म्हारी...

कई दिना सुं मन म लागी, जद यो शुभ दिन आयो है
मैया नै खुश करने खातिर यो दरबार सजायो है
हुकुम करो म्हारी दादी थारै कानी जोवां...मैया-२ म्हारी...

रंग बिरंगा फूलां से मां, थारो गजरो बनायो है
गोटा जरी की चुनड़ी उढ़ाकर मन म्हारो हरषायो है
सिर पर हाथ रखो रेनु के तिर जावाँ...मैया-२ म्हारी...

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : सुरज कब दूर गगन से...)

सावन की रूत है आई, ये लहर खुशी की लाई
इन्तजार है भादो आने का, मैया जी के दर जाने का
कि दादी का बुलावा आया है
सबका मन हरषाया है...२

झुझनुँ नगरी कोई इक बार तो जाकर देखे
कण-कण में दादी का नाम गुँजता देखे
बड़ी दूर से ही दिख जावे, गुंबज पे ध्वजा लहरावे-२ ॥ कि दादी...

रतन जड़ित सिंहासन, राणी सती माँ बैठी
निज भक्तों की झोली खुशियों से भर देती
मैया का खुला भण्डारा, करो प्रेम से जै जै कारा-२ ॥ कि दादी...

भादो मावस पे जो इस दरबार में आता
सारे दुःख कष्टों से, वो छुटकारा पाता
दरसन कर मैया का वो झुम-झुम कर गाता-२ ॥ कि दादी...

अगले बरस तुम सावन जल्दी फिर से आना
दादी के चरणों की सेवा हमको दिलाना
भाव से भजन सुनायें, मैया को रेनु रिझाए-२ ॥ कि दादी...

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : धरती धोरा री..)

मैया अरजी थे सुण लीज्यो, म्हापे दया दृष्टि थे की ज्यो
मनवांछित वर थे दी जो, म्हारा दादी जी म्हारा मैया जी
म्हारा दादी जी ।

सूरज लाल किरण छिटकावेओSSSS-२

पंछी राग प्रभाती गावे

थानै भोरां भोर जगावे म्हारा मैया जी-२

अम्बर निर्मल जल बरसावे, गंगा जमुना चरण धुलावे
चौसठ योगिनी चँवर ढुलावे, म्हारा मैया जी-२, म्हारा दादी जी...

फिर ये सात सुहागन आवे ओSSSS-२

थानै रक्ताम्बर पहरावे

नख-शिख तक सिणगार सजावे म्हारा मैया जी-२

कलियाँ चुन-चुन कर के लावे, थारे ताँई हार बनावे

मन म घणी-घणी हरषावे म्हारा मैया जी-२ म्हारादादी जी

थे हो म्हारे कुल की माई ओSSSS-२

म्हापे कीज्यो महर सदा ही

थारी जग मं जोत सवाई म्हारा मैयाजी-२

सिर पर हाथ दया को धरदयो, म्हारो जीवन सुखमय करदयो

किरपा राधेश्याम पे करदयो म्हारा मैया जी-२

म्हारा दादी जी... मैया...

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

मोटी सेठाणी, म्हारो बेड़ो पार लगाणों पड़सी ए,
मोटी सेठाणी ।

पीछो तेरो छोड़ूँ कोन्या, क्या मैं बड़सी ए,
मोटी सेठाणी... ।।टेर ।।

सूप देई पतवार मात म्हे, थारै भरोसै बैढ्या ए,
नींदड़ली तोड़ो कुल देवी, आणो पड़सी ऐ... ।। १ ।।

थानै अपनो जान के मैया, थारो पल्लो पकड़्यो ए,
माँ बेटा को रिस्तो थानै, निभाणो पड़सी ऐ... ।। २ ।।

म्हे थारो पल्लो छोड़ां कोन्यां, चाहे क्यूँ भी करले ए,
टाबर ताई हाथ दया को, बढ़ाणो पड़सी ऐ... ।। ३ ।।

टाबर की अर्जी पर मैया, काई थारी मर्जी ए,
“बनवारी” माँ आज फैसलो, सुनाणो पड़सी ऐ... ।। ४ ।।

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

बण रंगरेजा बण रे चुनड़ी बण रे,
म्हारी मैया रो श्रृंगार चूनड़ी बण रे ॥ ८ ॥

कैया रंगी चूनड़ी तूं म्हारी बण रे,
कोई गल फूलां रो हार, चूनड़ी बण रे ॥ ९ ॥

रंग दे गुलाबी रंग में चूनड़ी बण रे,
गोटेरी झालरदार, चूनड़ी बण रे ॥ १० ॥

मोल्यां रंगी चूनड़ी, तूं म्हारी बण रे,
कोई बीच ताराँ रो जाल, चूनड़ी बण रे ॥ ११ ॥

भावे दादी ने इसी चूनड़ी बण रे,
जिकी मोह लेवे संसार, चूनड़ी बण रे ॥ १२ ॥

होवै तेरो उद्धार चूनड़ी बण रे,
दादी की महिमा अपार, चूनड़ी बण रे ॥ १३ ॥

सेवक उढ़ावै चूनड़ी तूं म्हारी बण रे,
'महावीर' जगावे रात, चुनड़ी बण रे ॥ १४ ॥

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(स्वर-विजय सोनी)

मेहन्दी लेकर आये है मैया साथ में,
झीनी-२, रचेगी तेरे हाथ में,
ओ दादी भक्ति और श्रद्धा लाये साथ में,
झीनी-२, महकेगी तेरे हाथ में ।। ८ ।।

पहले दादी मेंहदी से नुआ करले,
मेंहदी का चाव मैया पूरा करले,
बड़ी प्यारी लगेगी तेरे हाथ में ।। ९ ।।

मेंहदी थोड़ी देर तू लगाये रखना,
चरणों में हमको बैठाये रखना,
मीठी बातें करेंगे तेरे साथ में ।। १० ।।

मेंहदी रचे हाथ मेरे सिर पे रखना,
भक्तों को आशीष देती जाना,
चूड़ा खनकै मैया जी तेरे हाथ में ।। ११ ।।

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

चुनड़ तो ओढ़ म्हारी दादी, सिंहासन बैठी जी,
कोई देवां भोत सहराई दादी म्हारी जी ॥ १ ॥

हीरा पन्ना (मोती मूंगा) सूंजड्यो थारो सिंहासन जी,
कोई ऊपर छत्तर हजार, दादी म्हारी जी ॥ १ ॥

अंग कसूमल थारे कब्जो तो सोहै जी,
कोई गले में हीरां को हार, दादी म्हारी जी ॥ २ ॥

हाथां में दादी थारे मेंहदी रची है जी,
कोई बाजूबंद की महिमा अपार, दादी म्हारी जी ॥ ३ ॥

काना में कुण्डल थारे, हद क विराजे जी,
कोई हाथां में लाल चूड़ो सोहै, दादी म्हारी जी ॥ ४ ॥

चुनड़ का अल्ला पल्ला भोत लुभावै जी,
कोई मांय तारा को सोहै जाल, दादी म्हारी जी ॥ ५ ॥

हाथां मं चूड़ो थारे, बायां में बाजूबन्द जी,
कोई माथे पे लाल टीको सोहै, दादी म्हारी जी ॥ ६ ॥

मन में ले आशा दादी कीर्तन में आया जी,
कोई भक्तां री आश पुरावो, दादी म्हारी जी ॥ ७ ॥

भक्तांरी अर्जी दी, मर्जी है थारी जी,
कोई थारे बिना कुण सुणसी, दादी म्हारी जी ॥ ८ ॥

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : राधे तेरे चरणों की...)

मैया तेरे दरसन को दीवाना आया है
आँखों के दो आँसू नजराना लाया है ।

हे झुंझनु वाली माँ, ये भेंट कुबूल करो-२
तेरा ही सहारा है, नजरों से ना दूर करो
किस्मत ने मेरी मैया, मुझे तुमसे मिलाया है ॥ आँखों...

तुम हो जग की जननी मैं तुमसे क्या मागूँ-२
बेटा मैं तेरा हूँ, मैं तो बस ये जानूँ...
मेरा धन्य हुआ जीवन, जब से तुम्हें पाया है ॥ आँखों...

तेरे दर पे आकर के आवाज लगाई है-२
अब हाथ पकड़ लो माँ, होबे रुसवाई है
तेरे चरणों से रेनु ने, माँ नेहा लगाया है ॥ आँखों...

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

दोहा - यौवन, धन और जीव को, जात न लागे बार ।
सुमरण कर माँ राणी सती का, जीवन का यह सार ॥

(तर्ज : पणिहारी)

सावन सुरंगो भादवो ए म्हान प्यारो लाग माँ,
म्हान प्यारो लाग माँ ।

हे बड़ भागन माँ, किरपा राखिए,
सरब सुहागन माँ, किरपा राखिए ।।टेर।।

ऊँचा शिखर थारो देवरो ए 'मईया शोभा आलिशान'-२
म्हे टाबर नादान-किरपा राखिए ।।१।।

थे दीना र कारण ए 'मईया लीन्यो अवतार'-२,
सांचो तेरो दरबार-किरपा राखिए ।।२।।

थे रूस्यां मईया ना सारे ए 'मईया पलकां खोल'-२
इकबर मुखड़े स बोल-किरपा राखिए ।।३।।

अपनो थाने जान कर ए 'मईया आया थारे द्वार'-२
हंस कर पलक उघाड़-किरपा राखिए ।।४।।

'बनवारी' कर जोड़ कर 'मईया करे अरदास'-२
पूरो मन की आस-किरपा राखिए ।।५।।

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : मेरी प्यारी बहनिया...)

नवरातों में घर मेरे आई है मैया
तारों वाली चुनर ओढ़े धानी
मेरे घर आई हैं माँ भवानी ।

सुन्दर से सुन्दर माँ ने रूप धरा है
भवत्तों के लिए नैनों में प्यार भरा है
सुन्दर श्रृंगार सबने दादी का करा है
ये तो रीत है सदियों पुरानी... ॥ मेरे...

मैया तेरी घर में पावन जोत जगाऊँ
सुबह-शाम भजूँ तेरे गुण मैं गाऊँ
जैकारे तेरे नाम के लगाऊँ
मैया रूत आई है ये सुहानी... ॥ मेरे...

आया-आया अष्टमी का दिन बड़ा प्यारा
कन्या पूजी घर में अपना भाग्य सँवारा
दादी स्वीकार करो प्यार हमारा
माँ क्षमा करना जो हो नादानी ... ॥ मेरे...

॥ श्री मातेश्वरी वन्दना ॥

(तर्ज : चाँदी की दिवार न तोड़ी...)

दादी जी या विनती म्हारी, सुणियो ध्यान लगाकर जी,
श्री चरणां की सेवा करस्याँ, रखियो म्हाने चाकर जी ॥

पूजा विधी ना जाणां कुछ भी, साँची बात बतावाँ हाँ,
रोली मोली श्री फल ले माँ, पूजन थाल सजावाँ हाँ,
पुष्पां सै श्रृंगार करा हाँ, गुण थारा ही गावाँ हाँ,
तन मन शीतल होवे थारे, चरणां को जल पाकर जी ॥१॥

वेद पुराण बखाणै है माँ, सतियाँ को सत् भारी है,
पण थारी तो बात निराली, थारी महिमा न्यारी है,
चमकै थारो तेज जगत में, सारी दुनिया ध्यारी है,
जनम-जनम को पाप कटे है, थारी शरण में आकर जी ॥२॥

आया दर पर आश लगा कर, माँ का दर्शन पावाँगा,
भक्ति भाव से भजन सुणाकर, दादीजी ने रिझावाँगा,
दयामयी दातार भवानी, खाली हाथ न जावाँगा,
माता सुख से रह न सकै है, टाबरिया न भुला कर जी ॥३॥

॥ श्री दुर्गा वन्दना ॥

दुर्गा भवानी आई रे, देवी दुर्गा-२

आई रथ पे सवार, छाया तेज वेशुमार,
माँ खुशियाँ हजार लाई रे देवी दुर्गा ॥ दुर्गा भवानी

तूही ने महिषासुर मारा, मधु कैटभ को तून पछाड़ा,
पहने मुण्डों की माला, क्रोध की भड़के ज्वाला,
रूप अनोखा पाई रे देवी दुर्गा ॥ दुर्गा भवानी

देवों के दुःखों को टारे शुम्भ निशुम्भ दनुज संहारे,
तेरी ना शानी है, दुनिया ने मानी है,
महिमा सभी ने गाई रे देवी दुर्गा ॥ दुर्गा भवानी

जो कोई द्वार तुम्हारे आया, मुँह माँगा सबही ने पाया,
पल में भण्डार भरदे, तू जो चाहे सो करदे,
पर्वत बनादे राई रे, देवी दुर्गा ॥ दुर्गा भवानी

तुम्ही हो मां जग की जननी, “कमल” आश करे चरणन की,
दुखों ने घेरा है, जीवन ये मेरा है,
दिल में उदासी छाई रे देवी दुर्गा ॥ दुर्गा भवानी

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

अपने दिल का हाल सुनावन आयां हां
मैं तो म्हारा श्याम ने रिझावन आया हां ।

भजन सुणास्या महिमा गास्यां, श्याम की जय जयकार लगास्यां
भूल चूक की माफ़ी माँगा, रुस्योड़ो घनश्याम मनास्यां
अपने प्रीतम ने मनावन आयां हां
मैं तो म्हारा श्याम ने रिझावन आया हां ।

श्याम हमारो दिल वालो है, पर थोड़ो सो नखराळो है
इकि बातां मैं जाना हां, यो तो म्हारो घर वालो है
घर के मालिक से बतलावण आया हां
मैं तो म्हारा श्याम ने रिझावन आया हां ।

सुख को साथी यो जग सारो, दुःख को साथी श्याम हमारो
श्याम ही बिगड़ी बात बनावे, म्हाने श्याम को खूब सहारो
उलझी गाठयां ने, सुलझावन आयां हां
मैं तो म्हारा श्याम ने रिझावन आया हां ।

यो जीवन नैया को मांझी, श्याम मिजाजी हो जा राजी
बिन्नू है चरणां को सेवक, टाबर से क्यांकी नाराजी
आंसूझां की भेंट चढ़ावण आयां हां
मैं तो म्हारा श्याम ने रिझावन आया हां ।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : कितनो बड़ो मेरो भाग्य है-सुपातर बिनती...)

कितनो बड़ो मेरो भाग्य है बाबा, थां सो देव मिल्यो,
म्हानै राजी राखोजी बाबा श्यामजी ।

सगलां न राजी राखोजी बाबा श्याम जी ।।टेर।।

दोहा : सांवरा मोटा धनी और जग में थारो नाम है
बड़ा-बड़ा थे कारज सार्या, छोटी-सो म्हारो काम है ।।

अर्जी करनो फर्ज म्हारो, जोर कुछ चालै नहीं ।

थारी मर्जी के बिना, एक पत्तो भी हालै नहीं ।।

नित उठ थारो, ध्यान धरा म्हें घणी करां मनुवार,

पलक उघाड़ो जी, बाबा श्याम जी ।।९।।

दोहा : श्याम जी म्हारो इष्ट है, और श्याम जी म्हारो प्राण ।

श्याम जी जद रुठ गया फिर जीनै को के काम ।।

भूल म्हारी माफ करद्यो, हृदय स लेवो लगाय ।

ठोकरें खाली बहुत अब, आकर सही रस्तो बताय ।।

थार बिना कैया जिवस्यां ओ बाबा, थे दिन्यो बिसराय,

ओल्युं थारी आवै जी, बाबा श्याम जी ।।१०।।

दोहा : थे ही म्हारी जिन्दगी हो, ओ थां पर दारमदार है ।

थारो थोड़ो मुलकनो और म्हारो बेड़ो पार है ।।

मैं तो थानैं के कहूँ, थे ही जगत का नाथ हो ।

हर साल खादू आऊं मैं, परिवार मेरे साथ हो ।।

म्हें तो थारा ही दास हाँ बाबा, सिर पर हाथ धरो,

यो वर मांगा जी, बाबा श्याम जी ।।११।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मनिहारी का भेष बनाया...)

॥ स्थाई ॥

किस्मत से शुभ दिन आया, श्याम खाटू से चलकर आया ॥

॥ अन्तरा ॥

चन्दन चौक पुराओ, मंगल कलश सजाओ ॥

कोई पुण्य सामने आया, श्याम खाटू से चलकर आया ॥...९

माथे तिलक लगाओ, हार बाबा नै पहराओ ।

बाबा प्रेम देख मुस्कायां, श्याम खाटू से चल कर आया ॥...२

मिल आरती उतारों, अपनों भाग्य संवारो ।

कोई छप्पन भोग लगाया, श्याम खाटू से चल कर आया ॥...३

हाल दिन का कहांगा, 'नन्दू' आल ना चुकांगा ।

कोई अर्जी पास कराया, श्याम खाटू से चल कर आया ॥...४

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

किस्मत वालों को मिलता है श्याम तेरा दरबार
सच्ची सरकार तुम्हारी, सच्ची सरकार ॥

जो भी गया है खाटू के दरबार,
पाया उसने सांवरिये का प्यार,
एक झलक जिसको भी मिल जाए,
दरशन से मन, बगिया खिल जाये,
खाली झोली जो लाये, भरता भण्डार ॥ १ ॥

कलियुग का बस एक सहारा है,
खाटूवाला श्याम हमारा है,
चारों तरफ दरबार की चर्चा है,
हाथों हाथ ये देता पर्चा है,
ऐसा ये देव दयालु श्याम सरकार ॥ २ ॥

उत्सव तेरा श्याम मनायेंगे,
हिलमिल कर हम तुझे रिझायेंगे,
गलती हो तो उसे भुलाना है,
श्याम प्रभु उत्सव में आना है,
'संजू' भक्तों की खातिर रहता तैयार ॥ ३ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

काली कमली वाला मेरा यार है,
मेरे मन का मोहन तू दिलदार है ।
तू मेरा यार है, मेरा दिलदार है ॥

मन मोहन मैं तेरा दीवाना, गाऊँ बस अब यही तराना ।
श्याम सलोने तू मेरा रिजवार है,
मेरे मन का मोहन तू दिलदार है ॥

तू मेरा मैं तेरा प्यारे, यह जीवन अब तेरे सहारे ।
तेरे हाथ इस जीवन की पतवार है,
मेरे मन का मोहन तू दिलदार है ॥

पागल प्रीत की एक ही आशा, दर्दे दिल दर्शन का प्यासा ।
तेरे हर वादे पे मुझे ऐतबार है,
मेरे मन का मोहन तू दिलदार है ॥

तुझको अपना मान लिया है, यह जीवन तेरे नाम किया है ।
चित्र विचित्र को बस तुमसे ही प्यार है,
मेरे मन का मोहन तू दिलदार है ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

कैंया सरसी रे साँवरा, कैंया सरसी रे
भोला टाबरिया न भूल्यां कैंया सरसी रे... ।

घणी जगह से पता करी सब याही बतलावे-२
खाटू वालो श्याम धणी तेरी नैया पार लगावे-२
हो लीले असवार तनै तो आनो पड़सी रे-२ ॥१॥

डगमग-डगमग डोले नैया सुझे नहीं किनारो-२
श्याम धणी तेरे भगतां नै, तेरो एक सहारो-२
आज शरण म्हानै भी दाता, देनी पड़सी रे-२ ॥२॥

जद-२ म्हा पर आफत आवे, नाम तेरो ही भावे-२
और कोई दुःख बाँटे नाहीं, तू ना देर लगावे-२
या आफत म्हारी भी भाया टाल्यां सरसी रे-२ ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : एक परदेसी मेरा दिल ले गया...)

खाटू वाले श्याम का जमाना आ गया
जो भी देखा श्याम का दीवाना हो गया ।

ऐसा दिलदार नहीं देखा संसार में,
झोलियाँ भरेंगी आज इस दरबार में,
भक्तों को खजाना ये लुटाने आ गया ।

जो.....

दुखियों की नाव यही है खिवैया,
बिन माझी नाव को चलायेगा कन्हैया,
भवसागर से पार ये लगाने आ गया ।

जो.....

कलियुग का देवता बड़ा ही महान है,
शीश का दान देके पाया श्याम नाम है,
दामोदर भी श्याम को रिझाने आ गया ।

जो.....

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : होठों से छू लो तुम...)

खाटू का तोरण द्वार, बैकुंठ का द्वारा है
बाबा ने स्वर्ग को ही धरती पे उतारा है ।

खाटू की ये गलियाँ, किसी स्वर्ग से कम तो नहीं,
ये श्याम कुंड का जल, अमृत से कम तो नहीं,
इस मिट्टी में कण-कण में, प्रभु वास तुम्हारा है ॥१॥

मेरे मन की बगिया तो, बनी श्याम बगीची है
मन की हर एक कली, तेरे नाम से सींची है
इस बगिया का बाबा, हर फूल तुम्हारा है ॥२॥

जब भी ये जनम मिले, तेरे प्रेमी ही कहलाएँ
होके तुमसे जुदा बाबा, तेरे बच्चे ना जी पायें
बाबा हम सबको तू, जान में प्यारा है ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

खाटू के कण-कण में बसेरा करता साँवरा
जाने कैसा वेश बनाए हर गली में आया जाया साँवरा
साँवरा तूझमें साँवरा, साँवरा मुझमें साँवरा,
साँवरा सब में साँवरा ... ।

रिंगस से खाटू नगरी तक, पैदल चलते लोग-२
पीठ के बल, कहीं पेट के बल, कई लेट के चलते लोग-२
कदम मिला भक्तों के संग में चलता साँवरा ।। जाने कैसा...

मेले में खाटू वाले के, जगह-२ पर डेरे-२
इस डेरे कभी उस डेरे और कहीं पे रैन बसेरे -२
आते जाते सब पर नजरें, रखता साँवरा ।। जाने कैसा...

बाबा के मन्दिर में देखो, लम्बी लगे कतारें-२
दूर-दूर के भक्त अनेकों, उनके अजब नजारे-२
कब किसको क्या-क्या देना है परखता साँवरा ।। जाने कैसा

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

घुघंटियो-३, आडे आग्यो आ गयो जी
थाने देख कोनी पायी बाबा श्याम...
घुघंटियो-३, आडे आग्यो आ गयो जी ।

म्हारो माथोऽऽ-२, चक्कर खाग्यो जी
थाने देख कोनी पायी बाबा श्याम ।

गीगलियो बिलखन लाग्यो जी
थाने देख कोनी पायी बाबा श्याम ।

बो बनियो, म्हाने सरकाग्यो जी
थाने देख कोनी पायी बाबा श्याम ।

म्हारो हिवडो भर-२, आग्यो जी
'शुभम रूपम' फेरुँ मिलजे बाबा श्याम ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में मुहोब्बत कभी-कभी...)

माँगा है मैंने श्याम से, वरदान एक ही,
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी ॥

जिस पर प्रभु का हाथ था, वो पार हो गया,
जो भी शरण में आ गया, उद्धार हो गया,
जिसका भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नहीं ॥

तेरी कृपा बनी रहे, जब तक...

कोई समझ सका नहीं, माया बड़ी अजीब,
जिसने प्रभु को पा लिया, है वो खुशनसीब,
इसकी मर्जी के बिना, पत्ता हिले नहीं ॥

तेरी कृपा बनी रहे, जब तक...

ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बनाइये,
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिए,
ऐसा करिश्मा होगा जो, हुआ कभी नहीं ॥

तेरी कृपा बनी रहे, जब तक....

कहते हैं लोग जिंदगी, किस्मत की बात है,
किस्मत बनाना भी मगर, इसके ही हाथ है
'बनवारी' कर यकीन अब, ज्यादा समय नहीं ॥

तेरी कृपा बनी रहे, जब तक...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मेरा परदेशी ना आया...)

मेरा साँवरिया आयेगा ओSSS मेरा साँवरिया आयेगा
देखेगी ये दुनिया सारी खादूवाले की दातारी
श्याम ना रुक पायेगा मेरा साँवरिया आयेगा ।

चाहे जितने करले सितम ये सारे दुनियावाले,
आज रूलाले जी भर मुझको तड़पा ले तरसा ले,
जिसने जितना मुझको सताया उतना मिल जायेगा ।
मेरा साँवरिया आयेगा...

आंधी आये तुफां आये काल भले टकराये,
मेघ ये काले संग बिजली के दम दम मुझको डराये,
मोर सा बनके श्याममेघ में मेरा दिल नाचेगा ।
मेरा साँवरिया आयेगा...

मुझको भरोसा इनपे अटल है देर भले हो जाये,
पर जब पानी हो सर ऊपर श्याम भी ना रुक पाये,
होंगे दुख अब दूर सभी और संकट घबरायेगा ।
मेरा साँवरिया आयेगा...

इन अंखियों की प्यास बुझेगी मन ये हर्षायेगा,
होंठ रहेंगे मौन भले ही चित्त ये बतलायेगा,
सरगम देगा श्याम मुझे फिर 'निर्मल' भी गायेगा ।
मेरा साँवरिया आयेगा...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...)

तोसे यो मन्दिर ना छुटे मोसे यो घर-बार
हम दोनों को वो मिल जाये जिसको जो दरकार

अगर तू घर आ जाये
तो घर मन्दिर बन जाये ।

मंदिर तुम्हारा बाबा घर है हमारा
बदले ना मंदिर घर में नियम है तुम्हारा
पल दो पल दरसन का बाबा है हमको अधिकार ॥ हम दोनों...

मंदिर पे तेरे बाबा हक ना हमारा
मगर मेरे घर में बाबा हक है तुम्हारा
वहाँ पर छत्र सिंहासन यहाँ मिले परिवार ॥ हम दोनों...
छत्र सिंहासन बाबा नहीं किसी काम के
दुनिया में डंके बजते बाबा के नाम के
इन छत्र सिंहासन के भी रहोगे तुम सरकार ॥ हम दोनों...

फरक क्या पड़ेगा तुमको इधर में उधर में
जो बात मंदिर में है वही बात घर में
जहाँ तुम्हारे चरण पड़ेंगे वही लगे दरबार ॥ हम दोनों...
घर को जो घर समझो तो बेटा बनालो
घर को जो मंदिर समझो नौकर बनालो

बनवारी बस सेवा चाहिए चाहिए तेरा प्यार ॥ हम दोनों...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे आजा...)

तेरे नाम का पुजारी आया, तेरे दर का भिखारी आया,
श्याम दे दो दर्शन, काँटो सारे मेरे गम...तेरे...।।टेर।।

(आओ श्याम, आओ श्याम-२)

बिन देखे तुझे, नींद आती नहीं, श्याम नहीं,
धोक खाये बिना, याद जाती नहीं, श्याम नहीं,
होठो पे है तेरा नाम, रहता सुबह और शाम,
मेरे सिर पर हाथ फिर जा ॥ १ ॥

दर छोड़ तेरा, श्याम जाऊँ कहाँ, मैं कहाँ,
दुःख दर्द मेरा, मैं सुनाऊँ कहाँ, श्याम कहाँ,
मेरा तू ही है आधार, तेरी महिमा अपार,
होके लीले पे सवार अब आजा ॥ २ ॥

तेरे चरणों से कैसे, लिपट जाऊं श्याम, मेरे श्याम,
तुम कहाँ हो छुपे, किस दर जाऊं श्याम, मेरे श्याम,
क्यों हो इतने खफा, मुझे इतना बता,
मेरे नैनो में आके समा जा ॥ ३ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

द्वापर युग की है ये कहानी, कैसे बना बाबा शीश का दानी
कलियुग में पूजे जग सारा, कन्हैया बाबा श्याम हो गया-२
दुनिया में इसका नाम हो गया ।

भीमबली का पोता था वो, अहलवती का लाला
नाम बर्बरीक का बालक था, अद्भुत शक्ति वाला
महाभारत का युद्ध करूँगा, उसने मन में ठाना
माँ ने कहा जो हारेगा, तू उसका साथ निभाना
तीन बाण ले करके वो कर में, लीले पे चढ़ के चला वो रण में
लेके - माँ के वचन का सहारा-२
कन्हैया... ॥१॥

श्री कृष्ण ने देखा उस बालक को रण में आते
क्यों आया है ये बालक, वो सोचे मन ही मन में
जब बालक ने श्री कृष्ण को अपने बाण दिखाये
श्री कृष्ण ने सोचा मन में, क्यों न इसे आजमायें
पैरों के नीचे पता छुपाके, बोले दिखाओ जरा तीर चलाके
बीधं के दिखाओ पीपल सारा-२
कन्हैया ... ॥२॥

बीधं के पत्ते तीर वो जब पैरों के पास में आया
देख के लीला श्री कृष्ण ने ऐसा खेल रचाया
इस रणभूमि के खातिर तुम क्या कर सकते हो
बालक बोला जो चाहो प्रभु, मुझसे ले सकते हो
बोले कन्हैया अपना, शीश थमा दे इस रणभूमि की प्यास बुझादे
सुनते ही शीश उतारा-२ ।।३।।

खुश हो करके कहे कन्हैया, शीश को लेकर कर में
श्याम नाम से पूजा होगी, कलयुग में घर-घर में
जो भी सच्चे मन से तेरी जै-जैकार करेगा
बन के तू उसका साथी बेड़ा पार करेगा
श्याम कहे महादानी वो बालक, कलीकाल में सबका पालक
बोलो शीश के दानी का जयकारा-२
कन्हैया... ।।४।।
खाटू में इसका धाम हो गया

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

थारे नाम सुं बाबा, पहचान है म्हारी

थारे नाम को, जोर है...

थारे नाम सुं चालें, ये गाडली म्हारी

दुनिया में शोर है...

श्याम थारो नाम...

श्याम थारो नाम लागे भगतां ने प्यारो है, श्याम थारो नाम...२

म्हारो जीने को सहारो है...श्याम थारो नाम...

थारो नाम लेता ही, लागे है जु म्हाने, कि थे हो सामने...

कितनो ही बड़ो हो काम, थारो नाम कर देवै, छोटो सो काम नै...ओ...

म्हारो तो बाबा, थारे नाम सु गुजारो है...२

जद से लियो थारो नाम, बनने लग्या है काम, की इब तो मौज़ है...

खुशियां ही खुशियां है, इ जिंदगानी में, की मस्ती रोज़ है...ओ...

श्याम थारो नाम म्हारे जीवन को रखवारो है ...२

थारे नाम सुं जीती, हारी हुई बाज़ी, थारो नाम ही काफी है...

कितनो ही बड़ो पापी, लेवे जो नाम थारो, मिलजावै माफ़ी है...ओ...

थारे नाम सुं बाबा, म्हारे जीवन में उजियारो है...२

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : देना हो तो दीजिए...)

मैं बझांरा श्याम का, घूमूँ देश प्रदेश
मेरे साथ-साथ में हरदम, चलता है खाटू नरेश ॥ ७ ॥

एक झोला कंधे पे जिसमें, श्याम भजन की पोथी है
इस पोथी में श्याम नाम के, कितने हीरे मोती हैं
जब श्याम दिवाने मिलते, उन्हें करता हूँ मैं पेश ॥ ९ ॥

आज यहाँ कल वहाँ ठिकाना, इस नगरी कभी उस नगरी
जाऊँ जहाँ वहीं मिलती है, श्याम की बगिया हरी-भरी
जो श्याम शरण में रहते, उन्हें कोई नहीं कलेश ॥ १० ॥

नित्य नया दरबार लगाकर, मिलता श्याम सलोना है
नये-नये रूपों में मुझपे, करता जादू टोना है
मुझको दर्शन देता है, वो बदल बदल कर भेष ॥ ११ ॥

जीवन में रंग भरने वाले, कारीगर को क्या दूँ मैं
दिल भी इसका जान भी इसकी, इसके लिए क्या त्यागूँ मैं
‘बिन्नू’ पर दृष्टि दया की, ये रखता नित्य हमेशा ॥ १२ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है,
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है ।

मेरी आपकी कृपा से....

पतवार के बिना ही मेरी, नाव चल रही है,
हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है,
करता नहीं मैं कुछ भी सब काम हो रहा है ।

मेरा आपकी कृपा से

तुम साथ हो जो मेरे किस चीज की कमी है,
किसी और चीज की अब दरकार भी नहीं है,
तेरे नाम से गुलाम अब गुलफाम हो रहा है ।

मेरा आपकी कृपा से

मैं तो नहीं हूँ काबिल तेरा पार कैसे पांए,
दूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाये,
तेरी ही प्रेरणा से ये तमाम हो रहा है ।

मेरा आपकी कृपा से

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : ये तो प्रेम की बात है ऊधो...)

मेरे साँवरे मुरलीवाले, तुने ये कैसा जादू किया है
जब से मैंने तुमको देखा, दिल मेरा दीवाना हुआ है ।

साँचा दरबार है इस धणी का
प्रार्थनाएँ ये सबकी है सुनता-२
फिर अपना करिश्मा दिखाता-२
बिन माँगे ही सब कुछ दिया है... ॥ मेरे...

ये तो हारे का साथी कहलाता
हर मुश्किल में आड़े है आता-२
सिर पे मोर छड़ी लहराकर-२
हमें कष्टों से मुक्त किया है... ॥ मेरे...

जब भी हारा हालातों के आगे
हौसला बन के रहते हो सागे-२
मैं तो काबिल नहीं तेरे प्यारे-२
इस नाचीज को जो दिया है... ॥ मेरे...

हमसे दूर ना जाना कभी भी
तेरे बिन रेनु जी ना सकेगी-२
मेरी लागी लगन को निभाना-२
तेरे चरणों को थाम लिया है... ॥ मेरे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(प्राइवेट)

मेरे श्याम से निराला कोई और नहीं है ।
मोहनी-मुरली बजाने वाला, कोई और नहीं है ।

कलियुग के ये सकल देवता, खाटु श्याम बिहारी-२
तीन बाण तरकस में सोहे, लीले की असवारी-२
पल में अपना बनाने वाला, कोई और नहीं है । मेरे...

महादानी है सेठ साँवरा, शीश दान दे डाला-२
हारे का ये साथ निभाये, बन जाये रखवाला-२
हारी बाजी जिताने वाला, कोई और नहीं है ॥ मेरे ...

दीन-दुःखी की रक्षा करते, बिगड़ी बात बनाते-२
डूब रही हो भँवर में नैया, झट से पार लगाते-२
बेड़ा पार लगाने वाला, कोई और नहीं है ॥ मेरे ...

तेरे दर पे मैं आया हूँ, लेके आशा भारी-२
झोली भरदे 'रेनु' की, सुन ले लख दातारी-२
दीनानाथ कुहाने वाला, कोई और नहीं है ॥ मेरे ...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बचपन की मुहोब्बत को...)

मुझे अपनाकर के श्याम, तुमने उपकार किया
तेरी कृपा ने प्यारे, जीवन ये सँवार दिया ।

तुमने तो पग-पग पर, मुझको तो सम्हाला है
तू ही मेरा मालिक है, तू ही रखवाला है
मैं भटकता था बाबा, तुने रस्ता दिखा दिया ॥ तेरी...

मैं निर्बल हूँ बाबा, मुझे सबल बना दो श्याम
तेरी चौखट पर बाबा, मैं दौड़ के आऊँ श्याम
तू सच्चा न्याय करे, सब तुझ पर छोड़ दिया ॥ तेरी...

जो लिखा विधाता ने, वो सहना पड़ता है
दीनों के दाता को, क्यूँ कहना पड़ता है
जो शरण पड़ा तेरी, उसे तुमने तार दिया ॥ तेरी...

सबका नम्बर आता, मेरा भी आयेगा
मेरा श्याम धणी आकर मुझे गले लगायेगा
तेरे चरणां में रेनु ने जीवन ये गुजार दिया ॥ तेरी...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : सावन को आने दो...)

मेरे सपनों में आते हैं, “खाटू के बाबा श्याम” ।।टेर।।

सपनों में दिखते हैं मुझको, खाटू के प्यारे नजारे,
बैठे सिंहासन बाबा, करते हैं मुझको इशारे,
वो हाथ हिलाते हैं, दर पे बुलाते हैं
थोड़ा मुस्काते हैं, खाटू ।।१।।

लहराते देखे हैं हमने, श्याम निशान हजारों,
हारे का साथी यही है, प्रेम से इनको पुकारो,
जो पैदल चलता है, संग उनके रहता है,
रस्ता दिखलाता है, खाटू... ।।२।।

सपनों में रोज हो आते, एक दिन सचमुच आना,
श्याम कहे थोड़ी सेवा, हाथों से मेरे कराना,
सपने मेरे सच होंगे, दोनों एक संग होंगे,
पूरे होंगे अरमान, खाटू... ।।३।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बार-बार तोहे क्या समझाए...)

नहीं चाहिए सोना चाँदी, ना हीरे जवाहरात,
मुझको साँवरिया दे दो, थोड़ा-सा तेरा प्यार ... ।।टेर।।

मिले जो तेरा प्यार मैं धन्य हो जाऊँगा-२
तेरी हर चौखट पर शीश झुकाऊँगा-२
जनम-जनम का सपना मेरा हो जाये साकार ।।९।।

प्रेम किया है तुमसे क्या अपराध किया-२
मैंने अपना जीवन तुझको सौंप दिया-२
फर्ज तुम्हारा भी तो जरा-सा बनता है सरकार ।।१२।।

कठपुतली मैं तेरे हाथ की बनवारी-२
चाहे जैसे नाच नचाओ गिरधारी-२
'रेनु' की डोर है तेरे हवाले, सुनलो लखदातार ... ।।१३।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : ..)

यो पांडव कुल अवतार, बड़ो अलबेलो है-२

कर ले करुण पुकार सौप दे-२ नैया की पतवार, बड़ो अलबेलो है ।

यो पांडव कुल अवतार, बड़ो अलबेलो है-२ ॥

घुंघरवाला बाल श्याम का, मोर मुकुट मनहारी-२

शरणागत की रक्षा करता-२, श्याम ध्वज बन भारी-२ ।

मेलो लागे चार श्याम को-२, है मोटो दरबार

बड़ो अलबेलो है ।

यो पांडव कुल अवतार, बड़ो अलबेलो है-२ ॥

मोटा-मोटा नैण श्याम का, ज्यूं अमृत का प्याला-२

दिल का दरिया ये मनगरिया-२, मंगल करने वाला-२

राखे नहीं उधार मेरो यो-२, सांवलियों सरकार

बड़ो अलबेलो है ।

यो पांडव कुल अवतार, बड़ो अलबेलो है-२ ॥

श्याम बहादुर सरस सलूणों, शिव रसियो सैलानी-२

तुरता-तुरती काम पटावै-२, ऐं की बाण पुराणी-२

खूब सज्यों सिणगार तेरो यो-२, नैया को खेवनहार

बड़ो अलबेलो है ।

यो पांडव कुल अवतार, बड़ो अलबेलो है-२ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : प्यासे पंछी नील गगन के...)

साँवरिया तुम्हें एक राय दूँ, मानो तो मरजी तुम्हारी ।

ना मानो तो मरजी तुम्हारी ।

बदलो अपने नियम कायदे, बदल जाओ बनवारी । मानो..

लख चौरासी भटक भटक कर मानव तन ये पाया-२

उसमें भी कई-कई जनमों का लेखा-जोखा लाया-२

कौन से जनम का कैसा-करम है, कैसा भोग मुरारी । मानो...

सतयुग त्रेता द्वापर युग के, और ही थे वो प्राणी-२

सौ-सौ वर्षों जप-तप करते, तब तुम्हें पाते स्वामी-२

सहने की शक्ति उनमें थी, चाहे बीते उमरिया सारी । मानो...

ये कलियुग है प्रभुजी इसमें, अधीर सभी जीवन में-२

करम का फल ये झटपट चाहें, धीर नहीं है मन में-२

इसी जनम का, इसी जनम में, न्याय करो गिरधारी । मानो...

अब ना होंगे नानी-नरसी, ना मीरा ना करमा-२

इतनी परीक्षा लेना छोड़ो, 'रेनु' की तुम कान्हा-२

फिर से गीता ज्ञान सुना दो, आओ धरा पे बिहारी । मानो...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : लेके पहला-पहला प्यार...)

साँचो-साँचों है दरबार, सारो पूज रयो संसार
खाटू नगरी में बैठयो है कलियुग को अवतार ।

श्याम धणी की देखो बड़ी सकलाई,
दीन दुखी की होवे, पल में सुनाई,
जो भी करतो करुण पुकार, बाबो विपदा देव टार ॥१॥

झोली पसारयां जो भी, मांगण आवे
मुँह मांगयो देव है यो, देर ना लगावे,
मांगो-मांगो हाथ पसार, बाबो देवण नै तैयार ॥२॥

साँचि प्रेमियों पे ऐसो, रंग चढ़ावे,
प्रेम की गंगा मं बतो, डुबकी लगावे
लूटे साँवरिये को प्यार, बानैक्यां की इब दरकार ॥३॥

जिस भाव से भी जावो, जाकर के देखो,
श्याम चरणां मं बिन्नु, माथो तो टेको,
बाबो जीवन देव संवार, बांको सुखी रहवे संसार ॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : आदमी मुसाफिर है...)

सांवरे की महफिल को, सांवरा सजाता है,
किस्मत वालों के, घर में श्याम आता है ॥ टेरे ॥

गहरा हो नाता बाबा का जिनसे,
मिलने को बाबा, आता है उनसे,
उनका ये साथी बन जाता है ॥ १ ॥

किरपा बरसती है जिस पे इसकी,
तकदीर लिखता हाथों से उसकी,
गम का अंधेरा छंट जाता है ॥ २ ॥

भजन सुनाते जो इसको प्यारे,
उसके तो परिवार के वारे न्यारे,
मंदिर सा घर बन जाता है ॥ ३ ॥

कुछ भी असंभव होता नहीं है
महफिल में इसकी होता यही है
'सुनील' सब यहाँ मिल जाता है ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

साँवरे सँ प्रीत लगाले मना,
बिगड़ी हुई को बनाले मना ।।साँवरे।।

भूल्यो कोल फँस्यो माया में, चेत चेत अज्ञानी ।
औसर बीत्यां हाथ न आवै, जग तेली की घाणी ।
नैण सू नैण मिलाले मना, बिगड़ी हुई को बनाले ।। १ ।।

बिन हरि शरण नाँय छुटकारो, नाम रतन क्यूं भूल्यो ।
नेक कमाई साथण तेरी, श्याम लगन क्यूं भूल्यो ।
प्रीत की रीत निभाले मना, बिगड़ी हुई को बनाले ।। २ ।।

जुग जुग का तेरा लेखा जोखा, जिणनै जीव चुकाले ।
ओलै छानै मन पंछीड़ा, प्रीतम सैं बतलाले ।
नेह की डोर बढ़ाले मना, बिगड़ी हुई को बनाले ।। ३ ।।

रंग कारो केसरिया बागो, लीलै की असवारी ।
तीन बाण तरकस में सोहे, 'काशी' लख बलिहारी ।
अन्तर नै समझाले मना, बिगड़ी हुई को बनाले ।। ४ ।।

॥ श्री श्याम भजन ॥

साँवरिया सरकार बेगा आओ, थारी है दरकार बेगा आओ
कद सूँकरुँ पुकार ना बिसराओ आओ, थारी है दरकार बेगा आओ ।

तेरी किरपा से तेरे भजन मिल गए
मेरे जीवन में लाखों, सुमन खिल गए
रहे बगिया ये गुलजार....करके जरा विचार बेगा आओ ।
साँवरिया सरकार....

मैंने तेरे ही खातिर उठाया ये कदम
वरना दुनिया में रुसवा हो जाते बाबा तुम
ये है तेरी मेरी बात...करके जरा विचार बेगा आओ ।
साँवरिया सरकार....

तेरी पूजा समझके झुकाई गर्दन
अब बारी तुम्हारी, मिटादे उलझन
करुँ तेरी जय जयकार...करके जरा विचार बेगा आओ ।
साँवरिया सरकार....

रोज कहने में मुझको तो आती है शरम
लाज दोनों की गिरवी पड़ी है बाबा सुन
'नन्दू' थाँ पर दारमदार...करके जरा विचार बेगा आओ ।
साँवरिया सरकार....

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : सौ साल पहले...)

श्याम सलूणां थारो, उत्सव मनायो है-२

मिलकर के सगलां दरबार सजायो है ।

थानै लिखकर के पाती बाबाजी न्यूतो भेजो है

आज रविवार को दिन, छुट्टी को मौको है

लीले ने थारे सागे, बाबाजी बुलायो है-२ ॥ मिल...

थारो खूब सज्यो सिणगार, निजरां ना लागे जी

कोई काली टीको लगाओ और लूणं-राई वारो जी

मोर छड़ी की शोभा मनड़ो लुभायो है-२ ॥ मिल ...

साँवरियो बन के सेठ मोकलो माल लुटावे है

जो आवे सो पावे झोली भर ले जावे है

कलियुग में बाबा को परचम लहरायो है-२ ॥ मिल

यो श्याम लिओ परिवार थारी बाट उड़ीके है

थे बेगा सूं आज्यो म्हारो हिवड़ो धड़के है

भूल-चूक माफ कीजो, अरजी लगायो है-२ ॥ मिल...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : आसरा एक तेरा सहारा...)

श्याम तेरे भरोसे, मेरा परिवार है ।
तू ही मेरी नाव का मांझी, तू ही पतवार है ॥ टेर ॥

हो अगर अच्छा मांझी, नाव भी पार होती,
किसी की बीच भंवर में, फिर ना दरकार होती,
अब तो तेरे भरोसे, मेरा घरबार है ॥ १ ॥

मैंने अब छोड़ी चिन्ता, तेरा जब साथ पाया,
तुझको जब भी पुकारा, अपने ही पास पाया,
मुझपे एहसान तेरा, बाबा बेसुमार है ॥ २ ॥

मुझको अपनों से बढ़कर, सहारा तूने दिया है,
जिन्दगी भर जीने का, गुजारा तूने दिया है,
कहता पवन ये तेरा, बड़ा उपकार है ॥ ३ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बाबुल का ये घर बहना ...)

श्याम तेरा खादू भी एक तीरथ-सामना है
क्योंकि तेरे दर पे तो, सारा झुकता जमाना है ।

श्याम कुण्ड है ऐसा जो कलि मल हरता है
जो भी इसमें नहाता है काया निर्मल वो करता है
लाखों-२ भगतों ने इसे अमृत-सा माना है ॥ श्याम...

सच्चा दरबार यहाँ मेरा बाबा चलाता है
ग्यारस की ग्यारस को भगतों को बुलाता है
जो भी मांगों मिलता है तो भगतों क्या बताना है ॥ श्याम...

जो भी यहाँ आता एक तीरथ-सा फल पाता
बाबा से उसका भी एक रिश्ता जुड़ जाता
श्याम तेरी महिमा को रामा ने बखाना है ॥ श्याम...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बाबुल का ये घर...)

श्याम तेरे मन्दिर का, बड़ा सुन्दर नजारा है,
जिसने भी देखा तुझे, वो हुआ तुम्हारा है ॥ ८ ॥

तेरे मन्दिर की ईंटों से, तेरा नाम झलकता है,
तेरे श्याम बगीची का, हर फूल महकता है ।
जिसने तेरा नाम लिया, उसका चमका सितारा है ॥ ९ ॥

मेरे श्याम के मुखड़े पे, एक तेज चमकता है,
कलयुग का ये दानी श्याम, सातों सुख देता है,
जिसने तेरा दर्शन किया, उसे मिला सहारा है ॥ १० ॥

दीन दयालु श्याम, ये पार लगाता है
खुशियों से भरे दामन, ओर प्यार लुटाता है,
बाबा तेरी चौखट पे, 'अन्नू' का गुजारा है ॥ ११ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : सौ साल पहले...)

श्याम तुमने मुझको, बहुत कुछ दिया है-२

तेरा शुक्रिया है...तेरा शुक्रिया है ।

ऐ श्याम तुने हरदम, मुझको तो सम्हाला है
तू ही मेरा मालिक है, तू ही मेरा रखवाला है-२
लड़खड़ाया सौ-सौ बार, सहारा दिया है-२ ॥ तेरा...

तेरी रहमत से बाबा, मेरी नैया चलती है
घनघारे घटाओं से, बाहर भी निकलती है-२
जब भी फँसी मझधारों, पार किया है-२ ॥ तेरा...

हर धड़कन से बाबा, तेरा नाम निकलता है
तुझसे ही मिलने को, मेरा दिल ये मचलता है-२
महर हो साँवलशा ये, अरज किया है-२ ॥ तेरा...

मुझे तुमसे मिला बाबा, अनमोल खजाना है
तेरे चरणों में रेनु का, बस एक ठिकाना है-२
तेरे भरोसे सारा, जीवन जिया है-२ ॥ तेरा...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : एक तेरा साथ...)

श्याम तेरा नाम-२ हमको देता शक्ति अपार है-२
तेरी महिमा अपरम्पार है ... ।

खाटू के राजा हो, तुम तो महाराजा हो, तेरी क्या बात है-२
कार्तिक में फागुन में, मेला लगे भारी, बँटे सौगात है
सबकी मुरादें ओऽऽऽऽ-२ पूरी होती, ऐसा ये दरबार है ।
तेरी महिमा अपरम्पार है

ऐसा महादानी दूजा नहीं देखा, कहे संसार है-२
भगतों की खातिर तो, लीले पर चढ़ बाबा, हरदम तैयार है,
भीड़ पड़े पर आँच-२, ना आने देते ये दातार है ।
तेरी महिमा अपरम्पार है

दुःख हो या सुख हो, दिन हो या रात्रि हो, प्रभु तेरा साथ हो-२
कामना तुझसे, बस यही है 'रेनु' की, लो अब स्वीकार करो,
इस नैया का श्याम-२, केवल तू ही खेवन हार है ।
तेरी महिमा अपरम्पार है

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : गाड़ी वाले मन्ने बिठाले...)

खादूवाले मुझे बुलाले, ये मेरी अरदास,
श्याम मंजूर करो ॥

खादू है प्रभु धाम तेरा, रटता हूँ मैं नाम तेरा,
भक्तों के मन को मोहे, ऐसा रूप है श्याम तेरा,
हम सेवक विनती करते हैं, करो हृदय में वास ।

श्याम मंजूर करो ॥ खादूवाले मुझे...

जिसने तेरा नाम जपा, उसका आवागमन मिटा,
प्रेम भाव से नाम लिया, जन्म-जन्म का पाप कटा,
जगदाधार तुम्ही हो भगवन, करो भक्ति प्रकाश ।

श्याम मंजूर करो ॥ खादूवाले मुझे...

भवभंजन दुखहार तूही, कलयुग का अवतार तूही,
सबका है करतार तूही, निराकार-साकार तूही,
बाबा श्याम करूँ मैं विनती, रहूँ चरण का दास ।

श्याम मंजूर करो ॥ खादूवाले मुझे...

आया हूँ मैं शरण तेरी, रखो लाज अब श्याम मेरी,
'मातृदत्त' यह अरज करी, सदा करो प्रतिपाल हरी,
चरण कमल का लिया आसरा,
मन की मिटादो त्रास ।

श्याम मंजूर करो ॥ खादूवाले मुझे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

जिस नैया के श्याम धणी हो खुद ही खेवनहार
वो नैया पार ही समझो बिना पतवार ही समझो ।

तुफां में कशती चाहे हिचकोले खाये
भँवर के थपेड़े चाहे जितना डराये
जग का खेवनहार थामे खुद जिसकी पतवार ।

माझी बनेगा जब ये साँवरा तुम्हारा
मझधार में भी तुमको मिलेगा किनारा
जिसका रक्षक बनकर बैठा लीले का अवसार ।

हर्ष तू जीवन नैया इसको थमादे
इसके भरोसे प्यारे मौज तू उड़ाले
हाथ पकड़ ले जब ये तेरा फिर किसकी दरकार ।
को...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

जब-२ प्रेमी कहीं पे कोई रोता है
आँख के आँसू से चरण को धोता है
अक्सर तन्हाई में तुम्हें पुकारे
ना जोर दिल पे चले...
हम हारे-हारे-हारे तुम हारे के सहारे ।

तू है मेरा इक साँवरा मैं हूँ तेरा इक बावरा
सुनता नहीं मेरी भला क्यूँ इतना बता दे क्या माजरा
आता नहीं है समझ कुछ मुझे... ॥ हारे...

क्या दूँ तुझे क्या है मेरा, जो है मेरा सब है तेरा
तुमने दिया मुझको प्रभु सब दिल की कहूँ सुन लो प्रभु
अब तेरे भरोसे रहूँ साँवरे... ॥ हारे...

तू साथ है तो डर ना सताये हर वक्त मेरा साथ निभाये
खाटू बुलाकर दुःखड़े मिटाये, कैसे कन्हैया करजे चुकाये
इतना बता दे मुझे साँवरे... ॥ हम...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : भोले ओ भोल...)

मेरी नैया ओ कन्हैया करदी तेरे हवाले,
जाने तू खाटूवाले-नैया तेरे हवाले जाने तू खाटूवाले ।

कन्हैया ओ कन्हैया

लाखों ही कोशिशों की पर इसे चला न पाया,
जब संभली ना मुझसे नैय्या तो शरण में तेरी आया,
डगमग डगमग डोला खाये हर पल मेरा दिल घबराये,
डूब कहीं न जाये-नैय्या तेरे हवाले जाने तू खाटूवाले,

कन्हैया ओ कन्हैया

जो बने तू इसका मांझी मस्ती में ये चलेगी,
चाहें लाखों तूफाँ आये उनकी ना कुछ चलेगी,
छिपती फिरेगी फिर मझधारे सजदा करेगी तेरा किनारें,
कौन इसे डुबायें-नैय्या तेरे हवाले जाने तू खाटूवाले,

कन्हैया ओ कन्हैया

जिस जिसने तुझको सौंपी जीवन की अपनी नैय्या,
बन गया तू उसका साथी और बन गया खिवैया,
निर्मल नैय्या का बन मांझी संजय संग है प्रीत ये साझी,
श्याम तू पार लगाये-नैय्या तेरे हवाले जाने तू खाटूवाले,

कन्हैया ओ कन्हैया

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : रो रोकर फरियाद करो हाँ...)

मैं हूँ तेरा, नौकर तेरी, हाजरी रोज लगाता हूँ ।
मिलती है तनख्वाह जो तुमसे, मैं परिवार चलाता हूँ ॥टेर ॥

दर-दर मेरा-२, सर ये झुके न, सोच के दर तेरे आता हूँ
तेरे जैसा मालिक पाकर, दुनिया में इतराता हूँ,
स्वाभिमान से जीने वालों, को तेरी राह दिखाता हूँ ॥९॥

क्या देते हो-२, क्या लेते हो, कितनी मेरी मजदूरी है
सबके आगे भेद क्यूं खोलू, ऐसी क्या मजबूरी है
मिलता है, औकात से ज्यादा, दुनिया को बतलाता हूँ ॥१२॥

मुझसे काबिल-२, मुझसे लायक, सेवा को हैं तरस रहे
मुझ नालायक में क्या देखा, सोच के नैना बरस रहे
सांवरिये की सेवा करना, बच्चों को सिखलाता हूँ ॥१३॥

मैं न जानूँ-२, तू ही जाने, कितना मेरा जीवन हैं,
अच्छी लगी हो सेवा मेरी, फिर से समर्पित तन-मन है
अगले जनम में फिर से सेवा, की उम्मीद लगाता हूँ ॥१४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

भक्तों के घर भी साँवरे आते रहा करो,
दर्शन के नैण बावरे दर्शन दिया करो ॥ १ ॥

सूरत सलोनी आपकी आखों में बस गई,
ऐसी झलक मिली हमें दिवाना कर गई,
बढ़ती रहे दीवानगी ऐसी कृपा करो ॥ १ ॥

कहते हैं प्रेम से प्रभु छिलके भी खा गये,
चावल सुदामा विप्र के गिरधर को भा गये,
शबरी के जूठे बेर भी खाते रहा करो ॥ २ ॥

कुछ ना घटेगा आपका आकर तो देखिये,
पलकें बिछाई राह में मोहन तेरे लिये,
खाली पड़ा है दिल मेरा इसमें रहा करो ॥ ३ ॥

भक्तों की शान आप हो, भक्तों का मान हो,
भक्तों की जिन्दगी तुम्हीं, तन मन हो प्राण हो,
तेरे ही नाम की हमें, मस्ती दिया करो ॥ ४ ॥

माना तुम्हारे चाहने वाले अनेक हैं,
उन पागलों की भीड़ में 'बिन्नु' भी एक है,
तेरी दया का पात्र हूँ, मुझ पर दया करो ॥ ५ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : देना है तो दीजिए...)

दे दो अपनी नौकरी मुझको भी एक बार
बस इतनी तनख्वाह दे दो मेरा सुखी रहे परिवार ।

तेरे काबिल नहीं हूँ कान्हा फिर भी काम चला लेना-२
जैसा भी हूँ तेरा ही मैं गुण-अवगुण बिसरा देना-२
गर तेरी कृपा होगी-२ मेरा सुधरेगा संसार... ॥१॥

भगतों के तुम सेठ हो कान्हा मेरी क्या औकात है-२
तेरी सेवा मिल जाना ये तो किस्मत की बात है-२
मैं मानूंगा तेरा कहना-२ ये करता हूँ इकरार... ॥२॥

थोड़ी-सी माया देकर के हमको ना बहलाना जी-२
आज खड़ा हूँ सामने तेरे कोई हुकुम सुनाना जी
भगतों की इस अरजी को-२ ना ठुकराना सरकार... ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : सूरज कब दूर गगन से...)

भक्तों ने झूला डाला, झूले पर खादू वाला,
बैठा-बैठा मुस्काये, हमें झाला देय बुलाये,
कहता है, डोर हिलाओ तुम, मुझको तो, झुलाओ तुम ॥ टेरे ॥

सावन का महिना, रिमझिम बरसे पानी,
आया है खादू से, चलकर शीश का दानी,
भक्तों ने इसे बुलाया, ये प्रेम देखकर आया ॥ कहता ॥

धीरे-धीरे प्रेमी, डोरी हिला रहे हैं,
कितने खुश है सारे, प्रभु को झुला रहे हैं,
जब कोई कभी रुक जाता, मेरा श्याम धणी फरमाता ॥ कहता ॥

मस्ती में बैठा है, बड़ा मजा है आता,
कभी-कभी झूले में, खुद भी जोर लगाता,
ये उचक-उचक कर झूले, लगता है छत को छूले ॥ कहता ॥

सावन के झूले का, ये शौकीन पुराना,
मन में ना रह जाये, इतना इसे झुलाना,
'बिन्तू' तुम गौर करो ना, देखो मेरा श्याम सलौना ॥ कहता ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

आओ आओ सांवरिया बेगा आओ जीमोजी भोग लगाओ
मीठो है नमकीन है बाबा चरपरो थोड़ो खाटो
सोने की थाली में परोसेयो ढाल चांदी को पाटो
टाबरिया मनुहार करे बाबा देखूं थे कहियां नाटो
भोग लगाओ श्याम धणी रे प्यारा बाकी भक्तां ने बांटो
आओ आओ सावरियां बेगा आओ, जीमोजी भोग लगाओ,
है छप्पन भोग तैयार जी, थारा टाबरिया करे मनुहार जी ॥

केसरिया बरफी कलाकंद रबड़ी पड़ा इमरती बालूशाही,
लड्डू बूँदिया जलेबी रसगुल्ला गाजर पाक रसमलाई,
गुबाल जामुन शकरपारा घेवर न्यारा न्यारा,
जिमन आओ ना थोड़ो और घलालो,
है छप्पन भोग तैयार जी...थारा टाबरिया करे मनुहार जी... ॥१॥

दाल मोठ पकोड़ी कचोरी भुजिया पापड़ चिवड़ो
कढ़ी राबड़ी साग सांगरी को बाजरे का बाबा खीचड़ो,
रायता में जीरा को तडको पीओ मार सबरको,
साग काचरे की चट्नी चटाओ जिमोजी भोग लगाओ,
है छप्पन भोग तैयार जी...थारा टाबरिया करे मनुहार जी ... ॥२॥

काजू किशमिश नोजा खुरमानी, खोपरा चुहारा बदाम लियो
जीम जूठ के आचमन करके, फिर थोड़े आराम लियो
सौंफ इचायची हाजिर करदी सागे मिसरी धर दी
कोई नागरिया पान चबाओ, जिमोजी भोग लगाओ
है छप्पन भोग तैयार जी ... थारा टाबरिया करे मनुहार जी ... ॥३॥

आम अमरुद अंगूर अनारस आलू बुखारा अनार धरया,
केला सेब पपीता चिकू संतरा मौसम्बी रसधार धरया,
काकड़िया रे लाल मतिरा तर टमाटर खीरा
नींबू खाटो थोड़े छिड़काओ जिमोजी भोग लगाओ,
है छप्पन भोग तैयार जी...थारा टाबरिया करे मनुहार जी ... ॥४॥

छप्पन भोग परोसया थारा भगतां श्याम धणी स्वीकार करो,
सरल बावलो महिमा गावे अन्न धन्न से भंडार भरो,
लीला थारी सब जग जानी थे हो शीश का दानी,
बिगड़ी लख्खा की थे हो तो बनाओ जिमोजी भोग लगाओ,
है छप्पन भोग तैयार जी...थारा टाबरिया करे मनुहार जी ... ॥५॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

हो हाकम दुनिया का, खादू मैं बैठ्यो,

हुकम सुणावै है, हाकम...

हुकम सुणावै है यो साँचो, न्याय चुकावै है, हाकम... ।।टेर ।।

ई हाकम की आज हुकुमत, सारी दुनिया मैं चालै,

सारी दुनिया ऐं कै आगै, शीश झुकावै है,

हाकम दुनियो को ।।१ ।।

यो हाकम तो फरियादी कै, मन का भाव पिछाणै है,

ढोंगी-कपटी-लम्पट न यो, सजा सुणावै है,

हाकम दुनिया को ।।२ ।।

ई दरबार मैं हर पल भाया, होवै है सुणवाई रे,

लखदातारी सबकी मनस्या, रोज पुरावै है,

हाकम दुनिया को ।।३ ।।

यो हाकम तो पाप-पुण्य को, लेखो रोज करावै है,

‘रवि’ कहवै यो सबको तलपट, रोज मिलावै है,

हाकम दुनिया को ।।४ ।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

इतनी कृपा साँवरे बनाये रखना
मरते दम तक सेवा में लगाये रखना ।

तू मेरा मैं तेरा बाबा, तू राजी मैं राजी,
तेरे नाम पे लिख दी मैंने, इस जीवन की बाजी,
लाज तुम्हारे हाथ है, बचाये रखना...मरते... ॥१॥

हाथ जोड़कर करूँ प्रार्थना, भूल कभी ना जाना,
तेरे दर पे लगा रहे बस मेरा आना-जाना,
दिन पे दिन ये सिलसिला चलाये रखना... ॥२॥

तेरे प्रेमियों में मन लगता और कहीं ना लागै,
सब कुछ फीका-फीका लगता, तेरे प्यार के आगे
भजनों की इस भूख को जगाये रखना... ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : आ लौट के आज्ञा मेरे मीत...)

इक बार आ जाओ श्याम तुझे तेरा दास बुलाता है
तेरे दरसन को व्याकुल हैं प्राण, तुझे तेरा दास बुलाता है ।

करुणा निधि है नाम तुम्हारा, तू करुणा से रीझे
करुणा कर-कर हार गया मैं-२ बैठा है आख्यौ मीचे
देखो सुबह से हो गई शाम-२ ॥ तुझे...

लाखों को तुमने तारा है बाबा, लाखों की बिगड़ी बनाई
मेरी बर क्यूँ देर लगाते-२ लोग करें रुसवाई
तुम्हें कहते है दीनानाथ-२ ॥ तुझे...

भटक रहा संसार में बाबा, दिखता नहीं किनारा
तेरे भरोसे कशती को हमने, मझधारा में उतारा
मेरी रखनी पड़ेगी आन-२ ॥ तुझे...

प्रेम की डोरी से बाँधा है तुमको तुम हो प्रियतम मेरे
निर्बल को जो सबल बना दो-२ पैया पड़ूँगी तेरे
रेनू जपे तुम्हारा नाम-२ ॥ तुझे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

इतनी खातरी करवावे ऐको कांई लागे
अइयां बैढ्यो जइयां भगतां रो जंवाई लागे ।

रोज नया-नया सिणगार करावे
नया-नया श्याम मेरो गहना बनवावे
अण्टी होज्या ढीली बागा बनवाई लागे-२ ॥ अइयां

भगत कहवे जी इने बनड़ो-२
समझण लाग्यो खुद ने बनड़ो
इया मुलके जइयां-२ हो रही सगाई लागे-२ ॥ अइयां

घणी मनुहार करां जद यो आवे
व्याह शादी जितनो खरचो करवावे
जद यो आवे-२ सारे गाँव म बधाई लागे-२ ॥ अइयां

नैन जो मिलावां म्हासूँ नैन चुरावे-२
लाड कराँ तो म्हासुं मुखड़ो छुपावे-२
करके हाथ को इशारो-२ मुंह दिखाई मांगे-२ ॥ अइयां

चार दिनां का मिलनो जुलनो
मिला पाछे होवे जद बाबा से बिछुड़नो
आतो बनवारी बारात की विदाई लागे-२ ॥ अइयां

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तुम्हारी नजर क्यूँ खफा...)

तुम्हारी शरण मिल गई साँवरे,
तुम्हारी कसम जिन्दगी मिल गई
हमें देखने वाला कोई न था
तुम जो मिले बन्दगी मिल गई ।

बचाते न तुम डूब जाते कन्हैया,
कैसे लगाते किनारे पे नैया,
गमें जिन्दगी से परेशान थे,
मेरे लबों को हँसी मिल गई ।

समझ के अकेला सताती ये दुनिया,
सितम पे सितम हमपे ढाती ये दुनिया,
गनीमत है ये तुम मेरे साथ हो,
मुझे आपकी दोस्ती मिल गई ।

मुझे श्याम तुमपे भरोसा बहुत है,
तुमने हमें पाला और पोसा बहुत है,
आँखों का मेरी उजाला हो तुम,
अंधकार को रोशनी मिल गई ।

मुझे साँवरे इतना काबिल बना दो,
प्रेम की ज्योति दिल में जगा दो,
उंगली उठा के कोई ना कहे,
'संजु' के दिल में कमी मिल गई ।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : हार नहीं होगी हार नहीं होगी...)

ये प्रार्थना दिल की, बेकार नहीं होगी,
पूरा है भरोसा, मेरी हार नहीं होगी,
साँवरे जब तू मेरे साथ है, साँवरे सिर पे तेरा हाथ है ॥ टेर ॥

मैं हार जाऊँ ये, कभी हो नहीं सकता,
बेटा अगर दुःख में, पिता सो नहीं सकता,
बेटे की हार तुम्हें, स्वीकार नहीं होगी ॥ १ ॥

तूफान हो पीछे, या काल हो आगे,
कह दूँगा मैं उनसे, मेरा श्याम है सागे,
ऐसे में भी जग की, दरकार नहीं होगी ॥ २ ॥

घनघोर चले आँधी, सूने नजारे हों,
गर्दिश में भी चाहे, मेरे सितारे हों,
नईया कभी मेरी, मझाधार नहीं होगी ॥ ३ ॥

सच्चा समर्पण हो, दिल में अगर प्यारे,
'मोहित' भगत के लिए, भगवान खुद हारे,
इज्जत जमाने में, शर्मसार नहीं होगी ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : संसार है इक नदिया...)

एक आस तुम्हारी है, विश्वास तुम्हारा है
अब तेरे सिवा बाबा कौन हमारा है ॥

फूलों में महक तुमसे तारों में चमक तुमसे-२
मेरे बाबा, इतना बता दो कहां तुम नहीं हो
ये सबको पता है कि तुम हर कहीं हो
अगर तुम न होते तो दुनिया न होती
अंधेरा मिटाती है तेरी ही ज्योति -२

फूलों में महक तुमसे, तारों में चमक तुमसे - २
बर्फों में शीतलता, अग्नि में धधक तुमसे
जिस ओर नजर डालो तेरा ही नजारा है ।
अब तेरे सिवा बाबा, कहो कौन हमारा है । एक आस...

मझधार में नईया है, मजबूर खिचईया है - २
कन्हैया, विश्वास मेरा ये टूटे कभी ना प्यारे
तुम्हीं को लगानी है नईया किनारे
चलो आओ दूंदो ना कोई बहाना
सोचो जरा मेरा रिश्ता है पुराना
मझधार में नईया है मजबूर खिचईया है -२
नैया का खिचैया तो अब तू ही कन्हैया है
अब पार लगा बाबा मझधार किनारा है
अब तेरे सिवा बाबा, कहो कौन हमारा है । एक आस...

इस तन में रमे हो तुम, इस मन में रमे हो तुम
ऐ मेरे बाबा तुझसे जुड़ी है मेरी हर कहानी
तुम्हीं दे रहे हो मुझे दाना पानी
ये अहसान मैं तेरा कैसे चुकाऊं
किया है जो तूने कैसे भूल पाऊं
इस तन में रमे हो तुम, इस मन में रमे हो तुम
मैं तुमको कहाँ दुँ इस दिल में बसे हो तुम
घनश्याम दरस दे दो कोई ना हमारा है
अब तेरे सिवा बाबा, कहो कौन हमारा है । एक आस...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी देने वाले...)

किन्नै सुनाऊँ मनड़े री बातां,
हियो भर आयो तन्नै, बुलाता-बुलाता ।।टेर।।

पतित उधारण है नाम तिहारो,
बाट उड़ीकै तेरी यो औगणगारो,
देर क्यूं लगाई श्याम, तू भी आता-आता ।।१।।

कई बार दाता मेरी बिगड़ी सँवारी
पहल्या ही सिर पर तेरो कर्जो है भारी,
कई जन्म लागैगा, चुकाता-चुकाता ।।२।।

इब क के होग्यो तेर देर तूं लगाई,
घायल है मन को पंछी कर दे दवाई,
तड़फ रह्यो है जिवड़ो, दिन और रातां ।।३।।

तेर सिवा दूजो मेरो कुण सुणेगो
जो भी सुणेगो जग म हाँसी ही करेगो
'बिन्नू' को तू ही तो है, भाग्य विधाता ।।४।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : खड़ी नीम के नीचे मैं तो एकली...)

थां बिन म्हारी आँख्यां हो गई बावली,
ई टाबर कै मन मं बस गई, सूरत थारी साँवली ॥

मनड़ो म्हारो सूनो डोलै, डगमग झोला खावै है,
आँखडल्या बिरहा की मारी, आँसूझ टपकावै है,
कैया चलसी थां बिन म्हारी गाइली ॥
ई टाबर कै मन मं बस गई...

मीरां पर किरपा किन्ही थी, सुणबा आया बातइली,
दास थारो यो आस लगायां, खड्यो उड़ीकै बाटइली,
प्रेम जाम सैं भर दयो म्हारी बाटली ॥
ई टाबर कै मन मं बस गई...

पैल्यां प्रीत लगाय के तूं, क्यूँ छोड़ै मझधार जी,
प्रेमभाव को पाठ पढ़ाकर, मत बिसरै दिलदार जी,
मन मं रम गई सूरत थारी साँवली ॥
ई टाबर कै मन मं बस गई...

थे छोड़ो पण मैं ना छोड़ूँ, मैं तो थारो दास जी,
खाटू का घनश्याम मुरारी, मैं तो थारो खास जी,
आलूसिंह की थां बिन आँख्यां बावली ॥
ई टाबर कै मन मं बस गई...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धरती धोरां री...)

सुनल्यो दीनदयालु मेरी, इब थे मतना करियो देरी,
थासूँ अरज करूँ कर जोरी, बाबा श्याम धणी-३ ।

नैणां बाट उड़ीके थारी, कद थे आवोला बनवारी-२
थानैँ रिझा-रिझा कै हारी बाबा श्याम धणी-२ ।

इक बर म्हारे सन्मुख आज्ञा, मोहनी झलक श्याम दिखलाज्या,
जादूगारी वंशी सुणाज्या-बाबा श्याम धणी-३ ॥१॥

थारा दरसन इक बार पाऊँ, थारी सेवा करणी चाहूँ-२
म्हारो जीवन सफल बनाऊँ, बाबा श्याम धणी-२
म्हारी आशा पूरी करदयो सिर पर हाथ साँवरा धरदयो,
म्हारो सुपनों सांचो करदयो बाबा श्याम धणी-३ ॥२॥

दुनिया हाँसी उड़ावे म्हारी, इब तो जागो हे बनवारी-२
वरना पत जावेगी थारी बाबा श्याम धणी-२
म्हारो हिवड़ो भर-भर आवे, कोई राह नजर ना आव,
तन और मन दोन्यूँ कुम्हलाव, बाबा श्याम धणी-३ ॥३॥

थाने सौपं दर्ई है नैया, इब तो सुनल्यो किशन कन्हैया-२
बन जाओ इब तो खिवैया, बाबा श्याम धणी-२
इब तो बेगो चलकर आज्ञा, 'रेनु' की लाज बचाजा,
भवसागर सूँ पार लगाज्या बाबा श्याम धणी-३ ॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत को...)

कुछ दे या न दे श्याम, इस अपने दीवाने को,
दो आँसू तो दे दे, चरणों में बहाने को ॥ ८ ॥

आँसू वो खजाना है, किस्मत से मिलता है,
इनके वह जाने से, मेरा श्याम पिघलता है ।
काफी है दो बूँदे, घनश्याम रिझाने को ॥ ९ ॥

नरसी ने बहाये थे, मीरा ने बहाये थे
जब जब भी कोई रोया, तुम दौड़े आये थे ।
करुणा का तू सागर है, अब छोड़ बहाने को ॥ १० ॥

दुःख में बह जाते हैं, खुशियों में जरूरी हैं,
आँसू बिना 'संजू' हर आँख अधूरी है ।
पूरा करते आँसू, हर इक हरजाने को ॥ ११ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

तुम्हारी मेरी बात के जानेगो कोई
है कितनी दफा ही या पलंका भिगोई ।

जितना भी तेरी याद का आँसू मेरे खातिर दीवाली-२
मैं ये वन का फूल हूँ माधव तु ही तो इसका माली
दया से तुम्हारी ये फूला-फला है
कलाकार की ये निराली कला है
मैं गुण गाऊँ तेरे उतने ही कम है
मेरी कुछ ना हस्ती तुम्हें ही शरम है-२
अनजाने ही तेरी याद में-२ इतनी रातां खोई ॥ तुम्हारी...

मुझमें कोई इल्म नहीं है तेरी प्रीत निभाने का-२
अव्वल काम नहीं करती है देख के हाल जमाने का
किधर से किधर आदमी जा रहा है
नजर ना कोई रास्ता आ रहा है
दिला दें तुम्हें याद मैं आ रहा हूँ
इशारे पे तेरे चले जा रहा हूँ-२
सर आख्यां पर हुकुम तिहारो-२ तू करसी सो होई ॥ तुम्हारी...

तेरी मेरी प्रीत के मांही तीजो कोई पंच नहीं-२
तेरी पूजा अर्चन का है मन मंदिर-सा मंच नहीं
तेरा नाम लेकर जिये जा रहा हूँ
ये बेजोड़ हाला पिए जा रहा हूँ
मेरी जिन्दगी तेरी बांकी अदा है
ये शिव तो दीवाना तुम्हीं पे फिदा है-२
श्याम बहादुर उड़ता हंसा-२ देख जगत क्यूँ रोई ॥ तुम्हारी...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दानी होकर क्यूं चुप बैठा, ये कैसी दातारी रे

ओ श्याम बाबा क्यूं तेरे भगत दुखारी रे ।

बिन फल के जो वृक्ष न सोहे-२

बिन बालक ज्यों नारी रे...ओ श्याम...

बाबा तेरे भगत दुखारी रे ।

श्याम सुन्दर ने खुश होकर के, अपना रूप दिया है

और हमने उस रूप का दर्शन, सौ-सौ बार किया है

हमरे संकट दूर न हो तो ये बदनामी थारी रे ।

ओ श्याम...

ना मैं चाहूं हीरे मोती ना चांदी ना सोना

मेरे आँगन भेज दे बाबा, तुमसा एक सलोना

हमको क्या जो वन उपवन में-२, फूल रही फूलवारी रे

ओ श्याम बाबा...

जब तक आशा पूरी ना होगी, दर से हम ना हटेंगे

सब भगतों को बहका देंगे, तेरा नाम ना लेंगे-३

सोच ले तू भक्तों का पलड़ा-२, सदा रहा है भारी रे

ओ श्याम बाबा...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा-प्रेम की फाँसी लगा कर, छोड़ना वाजिब नहीं ।

हाथ धर कर छोड़ देना, ये कहीं वाजिब नहीं ॥

(तर्ज - पल्लो लटके)

निर्मोही नन्दलाल घणो तरसावे मतना
पुरानी यारी है रे साँवरा भुलावे मतना ॥ टेर ॥

मुलक-मुलक कर दूर-दूर से नित की जीव जलावे
एक बर तो नीड़े सी आकर क्यूँ ना बीण बजावे
मेरे कालजे में आग लगावे मतना ॥ १ ॥

नैना बरसे विरही तरसे, तू तो सुध बिसराई
बैरण नींद बड़ेरी रातां कइया होवे समाई
कन्हैया छीजे काया जीव न दुखावे मतना ॥ २ ॥

दुनिया हांसे नित की म्हांसे चाले आड़ी-आड़ी
तू छिटका देवगो तो चालेगी नहीं गाड़ी
मोटा सेठिया तू रोल मचावे मतना ॥ ३ ॥

दुःख हरता तू पालन करता साँचो श्याम बिहारी
'काशीराम' चरण को चेरो अर्ज करे गिरधारी
थारो बालकियो हूँ प्रीतड़ी घटावे मतना ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बचपन की मुहोब्बत को...)

दिलदार कन्हैया ने मुझको अपनाया है
रस्ते से उठा कर के सीने से लगाया है ।

ना करम ही अच्छे थे, ना भाग्य प्रबल मेरा-२..मेरे श्याम
ना सेवा करी तेरी, ना नाम लिया तेरा...
ये तेरा बड़प्पन है मुझे प्रेम सिखाया है ...

जो कुछ हूँ आज प्रभु, सब तेरी मेहरबानी-२ दीनानाथ...
शत्-शत् है नमन तुझको, महाभारत के दानी,
तूने ही दया करके, जीवन महकाया है...

प्रभु रखना सम्हाल मेरी, ये मन ना भटक जाये-२..मेरे श्याम
बस इतना ध्यान रहे, कोई दाग ना लग जाये,
बदरंग ना हो जाये, जो रंग चढ़ाया है...

एहसास है ये मुझको, चरणों में सुरक्षित हूँ-२ दीनानाथ
एहसान बहुत तेरे, भूले ना कभी बीनू,
श्री श्याम सुधा रस का, मुझे स्वाद चखाया है... ॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : सावन का महीना...)

कद सूँबाट उड़ीकूँ आ जाओ नन्दकिशोर
म्हाने भूल्याँ तो साँवरिया आसी थाने घणो जोर ।

आठों पहर थारा सुमिरन करस्यां
हिचकी आवेगी थानै याद म्हें करस्यां
थे तो हो प्रभु म्हारे कालजै री कोर-२ ॥ म्हाने...

अरदास थासूँ कद सै कराँ म्हे
काना न बन्द करके सो गया होके
जाग जा नहीं तो म्हे मचावांगा शोर-२ ॥ म्हाने...

दरमदार थांपर सारो है कन्हैया
पार लगाओ थे तो रेनु की नैया
थारे ही हाथां म्हें म्हारी जीवन डोर-२ ॥ म्हाने...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मोरिया...)

कन्हैया एक बार सुनादे प्यारी बाँसुरी-३
म्हारे हिवड़े में, उठे रे हिलोर ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया, बंशी सुन राधा हो गई बावरी-३
प्यारी लागे थारी, बंशी नंदकिशोर ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया, पलभर ना बिसरां थारी बाँसुरी-३
थारी बासुरी म्हांरी कालजड़री कोर ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया, जादू भरी है थारी बाँसुरी-३ ।
सुनके नाचे म्हारे, हिवड़रो मोर ॥ ३ ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया, शंकर रो डमरु थारी बाँसुरी-३
जग में, नाच नचायो, चहुं आरे ॥ कन्हैया ॥

कन्हैया, 'ताराचंद' की याही विनती-३
कर दे जग में सुहानी भोर ॥ कन्हैया ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तुम रुठ के मत जाना...)

बस इतनी तमन्ना है, ऐ श्याम तुम्हें देखूँ
घनश्याम तुम्हें देखूँ ।

सिर मुकुट सुहाना हो, माथे तिलक निराला हो
गल मोतियन माला हो, जब श्याम तुम्हें देखूँ ।

कानो में बाली हो, लटके लट घुँघराली हो
तेरे अधर पे हो मुरली, जब श्याम तुम्हें देखूँ ।

बाजुबंद बाहों पे हो, पैजनिया पावों में हो
होठों पे हँसी कुछ हो जब श्याम तुम्हें निरखूँ ।

दिन हो या रात्रि हो, चाहे शाम सबेरा हो
सोऊ तो सपनों में, बस श्याम तुम्हें देखूँ ।

चाहे घर हो नन्दलाला, कीर्तन हो गोपाला
हर जग के नजारे में, बस श्याम तुम्हें देखूँ ।

कहता है कमल ओ किशन सौगात मुझे ये दो
जिस ओर नजर फेरूँ, बस श्याम तुम्हें देखूँ ।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : कठै सूं आयी सूंठ...)

कुण सिणगार्यो यो कुण सिणगार्यो-२

सांवरियै नैं बनड़ो बणा दियो यो कुण सिणगार्यो-२

कठै सैं फूलड़ा ल्याया, ये कुण थारा हार बणाया-२

कुण जंचा जंचा पहरायाजी आपैं लूण राई वारो-२

कुण सिणगार्यो....॥

आलू सिंह जी बाग लगाया जामें फूलड़ा घणां उगाया-२

वही केशर तिलक लगाया जी सिणगार कीनों सारो-२

कुण सिणगार्यो....॥

थारै किरिट मुकुट कुण ल्याया, ये कुण थारै छत्र चढ़ाया-२

ज्यानै देख श्याम शरमायाजी, जैसे चांद को उजियारो

कुण सिणगार्यो....॥

थारा सेवक मुकुट चढ़ाया, थारा भक्तां छत्र चढ़ाया-२

म्हारी प्रसन्न हो गयी कायाजी, म्हारै मन में आनन्द छायो ।

कुण सिणगार्यो....॥

शृंगार सजीलो प्यारो, कहे सोहनलाल यो थारो-२

म्हानै दर्शन देता रैजो जी, थे सबका संकट टारो-२

कुण सिणगार्यो....॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

अस्थाई

हो हो गजरो ल्याया जी म्हारा श्याम धणी,

थारा टाबर आया जी ।

गजरो ल्याया जी...॥

अन्तरा

यो गजरो फूलां को गजरो, फूलां मं म्हारो प्यार भरयो,

थारो म्हारो प्रेम बढ़ैगो, बाबा थे स्वीकार करो,

ई गजरै पर श्याम धणी, थारो नाम लिखाया जी ॥

श्रद्धा भक्ति की या सूई और, प्रेम प्यार की डोरी जी,
चुग-चुग कै विश्वास की कलियाँ, आपस माँही जोड़ी जी,

ई गजरै पर श्याम धणी थारो नाम लिखाया जी ॥

ई गजरै की खुशबू सै या, सारी दुनियाँ महकेगी,
'बनवारी' या प्रेम की गंगा, आँख्या सै म्हारै टपकैगी,
ई गजरै पर श्याम धणी, थारो नाम लिखाया जी ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मेहन्दी रची थारै हाथा में...)

मोर छड़ी थारे हाथां में, हीरो चमके माथा में ।

थारे गल फूलां रो हार, बाबा श्याम धणी-३ ।

नाम सूण्यो हूँ जद से थारो, नींदइली नहीं आँख्यां में ।

बड़ी दूर से चलकर आया, दो दर्शन थारे भगतां ने ।

आँसू भरया मेरी आँख्या में, नैया है भव सागर में ।

म्हारी नैया पार लगावो...बाबा श्याम घणी ॥ १ ॥ मोर...

एक सहारो तेरो बाबा, म्हानै क्यूं तरसावै है ।

कब से तेरी टेर लगावां, क्यूँ ना दर्श दिखावे है ।

गले लगा तेरे टाबर ने, राह दिखदे भूल्यां न ।

अब सुनले लखदातार...बाबा श्याम घणी ॥ मोर...

म्हे तो सुणी हाँ बाबा थारी, महिमा अपरम्पार धणी ।

क्यूं तरसावै बाबा थारी, टाबरिया ने आस घणी ।

गुण गावां दिन-रातां ने, भूल गया सब कामां ने

अब नैया पार लगावो...बाबा श्याम धणी ॥ मोर...

‘काशीराम’ कहे श्यामबिहारी, सब भक्तों की टेर सुनो ।

सब भक्तां के संग में बाबा, म्हारे सिर पर हाथ धरो ।

भजन सुनावा म्हे थानै, दर्शन दे दो थे म्हानै ।

थारी भक्ति द्यो दातार...बाबा श्याम धणी ॥ मोर...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : ये कुण रंग डारयो...)

झुक गये बड़े-बड़े सरदार, तेरी मोर छड़ी के आगे-
तेरी मोर छड़ी के आगे, तेरी मोर छड़ी के आगे ।
झुक गये बड़े-बड़े सरदार, तेरी मोर छड़ी के आगे ।

तेरे आगे मान दिखाये, चाहे कोई अकड़ दिखाये,
टूटा अहंकार हर बार ॥ तेरी मोर...

राजा के रंक बनाये नौकर को सेठ कहाये,
झुक गये लाखों साहूकार ॥ तेरी मोर...

चाहे कोई घात लगाये, चाहे प्रतिघात लगाये,
कट गई बड़ी बड़ी तलवार ॥ तेरी मोर...

“सूरज” तेरी महिमा गाये, चरणों में शीश झुकाये,
झुक गया कलयुग में संसार ॥ तेरी मोर...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

ओ नील बरण का घोड़लिया
म्हार श्याम धणी नै ल्याजै रे ।

यो अहलवती को लालो है, यो भगतां को रखवालो है
यो सता को प्रतिपालों है, इन नै तू बेगो ल्याजे रे ।

ओ.....

मीरा को मान बढ़ायो है, प्रहलाद नैयोही बचायो है
नरसी को भात भरायो है, इन बांता ने समझा जारे ।

ओ.....

यो प्रेम को पाठ पढ़ायो है, गीता को ज्ञान सिखायो है
अर्जुन को रथयो चलायो है, इन सबने याद दिलाजा रे ।

ओ.....

पर्वत क अंगुली लगाई थी, गोकुल की जान बचाई थी
इन्दर की शान घटाई थी, इन लीला नै समझा जारे ।

ओ.....

भगतां नै करतो पार यो ही, 'आलुसिंह को है आधार यो ही
राधे को लखदातार यो ही, इनका दरसन करवा जारे ।

ओ.....

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : आयेगी-आयेगी-आयेगी किसी को हमारी याद आयेगी...)

आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा,
मेरा श्याम दयालु है, वो बड़ा कृपालु है,
लायेगा, लायेगा, लायेगा,
खुशियाँ हजारों संग लायेगा ॥

हारे का वो ही सहारा है,
वो सच्चा साथी हमारा है,
जो बन जाये मांझी मेरा,
फिर दूर कहाँ किनारा है ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा...

इस बेदर्दी दुनिया में वो,
मेरा अपना बनकर आयेगा,
मेरी सूनी बगियां में एकदिन,
माली बन फूल खिलायेगा ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीले चढ़ साँवरा आयेगा ...

इस अँधियारे जीवन में तो,
मेरा श्याम उजाला लायेगा,
हारा 'निर्मल' जगवालों से,
वो श्याम सहारा पायेगा ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

घुड़ल्यो मोड़ल्यो साँवरिया थारे भगतां री ओर
टाबरिया बुलावे बाबा आओ म्हारी ओर ।

खैंच ल्यो नकेल थारै घुड़ल्ये की साँवरा-२
कोई ठीलो छोड़या थानै ले जासी कटे ओर ।

म्हें कद से अरजी गेरी थे नहीं सुणिया साँवरा
कोई अरजी पढ़ के बाबा थे करल्यो थोड़ो गोर ।

बैठ दरुचे बाबाजी म्हें थारी बाट उड़ीका हाँ
म्हारे घर आवण म थानै आवे है कांई जोर ।

रवि कहवे यो प्रेम को नातो बाबा मत ना तोड़ो जी
कोई प्रीत के बन्धन की थे बाँधो कस के डोर ।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मेरी छतरी के नीचे...)

तू लीले चढ़कर आज्या, तेरी बाट उड़ीकां घड़ी-घड़ी ।

भक्तां दरबार सजायो है,
थाने न्यूतो श्याम भिजायो है,
अन्तर केशर की खुशबू,
फूलां की लटके लड़ी-लड़ी ॥ १ ॥

थारे केशर तिलक लगावांगा,
चांदी को छत्तर चढ़ावांगा,
केशरिया बागो ल्याया,
थारी लाम्बी-लाम्बी मोर छड़ी ॥ २ ॥

थारो छप्पन भोग बनायो है,
सब भगतां न बुलवायो है,
थाने खुश करने की खातिर,
थारां भक्तां नाचे घड़ी-घड़ी ॥ ३ ॥

म्हारी अर्जी सुनकर आज्यावो,
भगतां रो मान बढ़ा जावो,
“बनवारी” दरशन खातिर,
अंसुवन की लागी झड़ी-झड़ी ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : म्हारो गोरबंद नखरालो...)

लीलै घोड़े रा असवार, करां थारी मनुहार,
ओ बाबा, म्हारै घरां आओ जी ॥

कान मं थारै कुण्डल सोहै, गळ वैजयंती माळा,
शीश पै थारै मुकुट बिराजे, नैण लगे मतवाळा,
शोभा वरणी ना जाय, देख्यां मन हरषाय ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥

दीनां का थे नाथ कहाओ, पाण्डवकुल अवतारी,
महिमा थारी बरणी ना जाये, पूजे दुनिया सारी,
म्है भी धरां थारो ध्यान, गावां थारो ही गुणगान ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥

आंध्यां नै थे आँख्या देओ, पांगळिया नै पांव,
कोढ़ियां नै निरमल काया, जाणै सकल जहान,
अरजी करै है 'रमेश' हरो कष्ट कलेश ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मुझे प्यार की जिन्दगी...)

बहुत हो गया अब सम्हालो कन्हैया
सम्हालो कन्हैया बचालो कन्हैया ।।टेर ।।

दरिया दुखों की में नैया चलाना
कितना है मुश्किल प्रभु हमने ये जाना
दरिया सुखों की बहादो कन्हैया...बहुत हो गया...।।१।।

नहीं जग से आशा ना परवाह किसी की
अगर तूं है साथी तो ना चाहत किसी की
मुझे अपना साथी बनालो कन्हैया...बहुत हो गया...।।२।।

खुशियों से भरदो मेरा श्याम दामन
हरो पाप सारे करो मुझको पावन
'नन्दू' गले से लगालो कन्हैया...बहुत हो गया...।।३।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तुम्हें सूरज कंधु या चन्दा...)

मेरी नाव भंवर में डोले डगमग खाये हिचकोले
कहीं डूब न जाये बाबा, अबतो आके सुध लेले ॥

लाचार हुई है बाहें, पतवार सम्भल ना पाये
बिन तेरे कौन दयालु, मेरी कशित पार लगाये
इक अनजानी चिन्ता में, मन खोया होले होले ॥

मजबूर हुआ हूँ कितना, जग को कैसे बतलाऊँ
दिल चोर नहीं है मेरा, कैसे विश्वास दिलाऊँ
मेरी बंद पड़ी किस्मत के ताले अब तूही खोले ॥

तेरी दातारी के किस्से, दुनिया से सुने है दाता
अब महर करे तो जानू, हारे का तु साथ निभाता
तेरा “हर्ष” अकेला कहदे, दुखड़ो को कैसे झेले ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : और इस दिल में क्या रखा है...)

साथी हमारा कौन बनेगा, तुम ना सुनोगे तो कौन सुनेगा-२

आ गया दर पे तेरे, सुनाई हो जाये

जिन्दगी से दुःखों की विदाई हो जाये-२

एक नजर कृपा की डालो, मानूँगा एहसान-२

संकट हमारा कैसे कटेगा ॥ तुम... ॥१॥

सुना हमने सभी से, खिवैया एक ही है

ढूँढ़ ली सारी दुनिया, कन्हैया एक ही है-२

अब की अबकी पार लगाओ, मानूँगा एहसान-२

हमको किनारा कैसे मिलेगा-२ ॥ तुम... ॥२॥

पानी है सर से उपर, मुसीबत अड़ गई है

आज हमको तुम्हारी, जरूरत पड़ गई है-२

अपने हाथ में हाथ पकड़ लो, मानूँगा एहसान-२

साथ हमारे कौन चलेगा... ॥ तुम... ॥३॥

मना कर-कर के हारा, श्याम तुझको-पुकारा,

जहाँ में जो है अकेला, उसे तेरा सहारा,

दीन-दुःखी का साथ निभा दो, दे दो दया का दान-२

मेरा बेड़ा पार लगेगा... ॥ तुम ... ॥४॥

नाम जितना सुना है उतने दातार होक्या

दुयालू हो तुम कितने, फैसला आज होगा

अब तक केवल सुनते आये, अब देखेंगे श्याम-२

जो कुछ घटेगा तेरा घटेगा... ॥ तुम... ॥५॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(धमाल)

रिमझिम-रिमझिम आंख्यां से आसूंडा बरसे
श्याम धणी से मिलबा ताई मनड़ो तरसे ।

जल बिन मछली तड़पे बाबा, था बिन थांको दास
चाँद चकोरी जैयां म्हाने, श्याम मिलन री आस... ॥१॥

थारो म्हारो हेत हुयो कोई पूर्व जन्म को लेख
आंख्यां म बस जाओ म्हारे ज्यूँ काजल की रेख... ॥२॥

याद तेरी आता ही बाबा, देखूँ चारूँ ओर-२
बनवारी मं अैयां नाचूँ, ज्यूँ जंगल म मोर ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

आछा लाग्या थे सरकार, हो गया फागणिये से प्यार
चाहे जिन्दगी का दिन मेरा आधा कर दे
तेरे फागणिये के चार दिन ज्यादा कर दे ।

जितना देख्या हिसाब लगाकर
चार दिन चार जनम के बराबर
ओ मेरे साथ में यो सौदा मेरा दाता कर दे ॥ तेरे...

सोणा-सोणा प्यारा-प्यारा सारा संसार सै
फागण देख्या पाछे ऐने देखना बेकार सै
तेरे फागणिये का दिन लांखा-लाखा कर दे ॥ तेरे...

चाहे जितना एक दिन का दाम लगाले
चार दिन खातिर कुछ भी करा ले
बारहों महीना फागुण राखण का थे वादा कर ले ॥ तेरे...

गलती करी रे म्हाने फागणिये दिखाय कै
मारया बेमौत ऐने छोटो-सो बनाय कै
हामी बनवारी भजन गाता-गाता भर दे ॥ तेरे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा - फागण मेलो जोर को, भरसी खाटू धाम ।

मस्ती छणसी जोर की, जय-जय बाबा श्याम ॥

(तर्ज - होलिया मं उडे रे गुलाल...)

आयो बुलावो मेरो आज, फागणिये क मेले में
बाबो बुलावे मन्न आज, फागणिये क मेले में ॥ टेर ॥

रात नींद मं सोय रयो थो, सुपने माँही खोय रयो थो
हेलो लगायो बाबो श्याम, फागणिये क मेले में ॥ १ ॥

टोल्यां की टोल्यां जद जावे, मेरो भी हिवड़ो ललचावे
में भी ले जाके खेलूँ फाग, फागणिये क मेले में ॥ २ ॥

ऐसो रंग चढ़े फागण मं, ढपली चंग बजे फागण मं
सेवक नाचे नौ नौ लाल, फागणिये क मेले में ॥ ३ ॥

‘हर्ष’ साँवरो मेरी सुणली, जाणे की इब त्यारी करली
बेगो सो जाऊँ मैं तो आज, फागणिये क मेले में ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : मेरी प्यारी बहनिया...)

फागुन का महीना आया है बाबा
सबके मन में हैं खुशियाँ छाई
खाटू जाने की रूत है आई-२ ।

ऊँचे सिंहासन बैठा है बाबा
आने-जाने वालों पे प्यार है लुटाता
रंग-रंगीले निशान कोई लाता
कहीं श्याम ध्वजा लहराई... ॥ खाटू... ॥

सुन्दर से सुन्दर मेरा साँवरा सजा है
हाथों में मोर छड़ी लीले पे चढ़ा है
भगतों की खातिर धरती पे आया
तेरी जै-जै श्याम कन्हाई ... ॥ खाटू... ॥

एक झलक जो साँवरे का पाता
उसका तो बस वारा-न्यारा हो जाता
मस्ती में झूम-झूम वो ये ही गाता
यहाँ मन की मुरादे हैं पाई ... ॥ खाटू... ॥

पिछले जनम का कोई पुन्य किया है
साँवरे ने मुझको प्यार दिया है
चरणों से रेनु को लिपटाये रखना
तेरा नाम बड़ा सुखदाई ... ॥ खाटू... ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धरती धोरां री...)

फागण मास सुहाणो आयो,
खाटूवाळै कै मन भायो,
भगतां खाटू मांही आयो,
थानै न्यूतो छै, थानै न्यूतो छै ॥

देखो खूब सजै सिणगार,
लागै बाबै को दरबार,
होवै अन्तर की बौछार, थानै न्यूतो छै ।
बाबो सिंघासन पर साजै,
ढोलक-झांझ-मजीरा बाजै,
सेवक मगन होय कर नाचै, थानै न्यूतो छै ॥

दुखिया दर्द सुणावै आके,
रोगी तन की भिक्षा मांगै,
निर्धन धन की कामना राखै, म्हारै बाबा सैं ।
थे भी थारा कष्ट मिटाल्यो,
ऐं सैं मन चाया वर पाल्यो,
इक बर बाबा सैं बतलाव्यो, थानै न्यूतो छै ॥

बाबो ऐसो है दातारी,
यांकी लीला अदभुत न्यारी,
यांको ध्यान धरै संसारी, थानै न्यूतो छै ।
मनवा दो पल श्याम सुमिरले,
अपणी बुद्धि निर्मल करले,
बैतरणी सैं पार उतरले, थानै न्यूतो छै ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

म्हाने खाटू में बुलाले बाबा श्याम
आयो मेलो फागण को ।

कई दिना सुं मन में लागि जावां खाटू धाम
एक एक दिन गिन कर कांटा कियां दिखे श्याम
म्हाने खाटू में बुलाले बाबा श्याम

फागण मास रंगीलो थारे भगता के मन भावे
खाटू के मेले के माहि नाच कूदता आवे ।
म्हाने खाटू में बुलाले बाबा श्याम

श्याम धणी सुं आस घनि यो भगतां रो प्रतिपाल
मेहर करो सेवक के ऊपर दर्शन दो हर साल ।
म्हाने खाटू में बुलाले बाबा श्याम

आलू सिंह पर किरपा थारी रोज करे श्रृंगार
केसर तिलक लगावे थारे इत्तर की भरमार ।
बाबा संजू ने बूलाले खाटू धाम
आयो मेलो फागण को
म्हाने खाटू में बुलाले बाबा श्याम

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

हैलो आयो रे साथीड़ो, बाबा श्याम बुलायो रे ॥

खाटू की नगरी मं बाबा, श्यामधणी को ठीड़ो रे,
ज्यां सैं मिलणै कै खातिर, यो जी ललचायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

फागणियै मं भोत जोर को, मेळो ऐंको लागै रे,
श्याम ध्वजा ले रींगस सैं, थे पैदल चालो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

बाजै चंग अनोखा ज्यांकी, तान पे सेवक नाचै रे,
घूमर ज्यांकी देख-देख म्हारो, मन हर्षायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

आंकै जैसो सेठ कोई भी, ई जग मं ना दिख्यो रे,
दो मीठी-मीठी बातां सैं, काम बणाओ रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

ज्यूँ-ज्यूँ मेळो नीड़ै आवै, मनड़ो धीर गँवावै रे,
बाबा सैं मिलणै की खातिर, जी भरमायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

लागेगो दरबार श्याम को, खुलकर माल लुटावेगो
श्याम परिवार कै या ही जचगी, माल कमाल्यो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो ...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

श्याम धणी को आयो रे बुलावो,
तो चालो खाटू धाम, आयो फागणियो,
मेले में मिलैगो म्हारो साँवरियो ॥ टेर ॥

श्याम का सेवक पैदल चालै,
श्याम बिना गाड़ी नहीं हालै,
सागै चालतो मिलैगो म्हारो साँवरियो ॥ १ ॥

श्याम का सेवक चंग बजावै,
घुमर घालै और भजन सुणावै,
सागै नाचतो मिलैगो म्हारो साँवरियो ॥ २ ॥

श्याम का सेवक जीमण बैठे,
'संजू' श्याम भी न चैन से बैठे,
फलको बेलतो मिलैगो म्हारो साँवरियो ॥ ३ ॥

'काशीरामजी' की कृपा है भारी,
मेले में चालो सारा नर-नारी,
सारे भक्ताँ कै सागै म्हारो साँवरियो ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : टूटे बाजूबंद..)

म्हारे साँवरिये री पोल
मांची-मांची-२ रे रमझोल
आयो फागणियो सुहानो
नाचे मनडो रो मोर
चंग बाजे रे सुरीला
छम-२ नाचो रे बादीला
आयो फागणियो... ।।टेर ।।

रुण-झुण बाज रह्या घुंघरिया
थारे पंगा मं ओ सांवरिया
सुण-२ पायल की झंकार
बाजे मन वीणा रो तार
चंग बाजे... ।।१ ।।

थारा घुंघर वाला बाल
छुए लटकन थारा गाल
थारो रूप सलोनी सोणो-२
लागे म्हारा श्याम
चंग बाजे... ।।२ ।।

थारा नैण बड़ा कजरारा
मोटा-मोटा, प्यारा-प्यारा
जादू म्हापे ऐसा डारो
थारा नैना मतवारा
चंग बाजे... ।।३ ।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : काली कमली वाला मेरा यार है...)

श्याम सलोने का प्यारा श्रृंगार है-२
कितना सुन्दर सांवरा सरकार है
सजा दरबार है के छाई बहार है-२ ।।टेर ।।

मोर छड़ी हाथों में विराजे, मोर मुकुट है सिर पे साजे
कान में कुंडल गल वैजन्ती हार है-२ कितना सुन्दर...

बागा इनका बड़ा ही न्यारा जरीदार ये प्यारा प्यारा
हीरे मोती रत्नों की भरमार है-२

केशरिया है चंदन सुहाना खुशबु उड़े और करे दिवाना
केशर के संग इत्तर की बौछार है-२

गेंदा और गुलाब मोगरा रजनीगंधा का है गजरा
जूही चमेली संग महके कचनार है-२

कलिकाल का ये अवतारी लीले की करता है सवारी
तीन बाण का पाया ना कोई पार है-२

बोलो जय श्री श्याम रे भक्तों 'निर्मल' ये कहता है सबको
श्याम नाम में ही जीवन का सार है-२

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : रेशमी सलवार कुर्ता जाली का...)

लुटा दिया भण्डार खाटू वाले ने ।

कर दिया मालामाल खाटू वाले ने ॥ टेर ॥

जैसी जो भावना लाया, वैसा ही वो फल पाया ।
नहीं खाली उसे लौटाया, वो मन ही मन हरषाया ।
अरे कर दिया उसको निहाल, खाटू वाले ने ॥ १ ॥

जो लगन लगाया सच्ची है उसकी नाव ना अटकी ।
नैया को पार लगाया, नहीं देर करी वो पल की ।
अरे मिटा दिया जंजाल, खाटूवाले ने ॥ २ ॥

जिसने श्रृंगार सजाया, वो बाबा का दर्शन पाया ।
जिसने मांगा है बेटा, वो चाँद सा टुकड़ा पाया ।
दिया है जन्म सुधार, खाटूवाले ने ॥ ३ ॥

चरणों की किया जो सेवा, वो पाया मिश्री मेवा ।
वो मन ही मन हर्षाया, नैनों में रूप समाया ।
कर दिया सबको निहाल, खाटू वाले ने ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

बेगा चालो रे, बाबा को खजानों,
लुटणै वाळो है ॥

भगतां की तो भीड़ लाग रही,
मोटो सेठ लुटावै रे,
लूट सकै तो लूटले सब कुछ,
मिलणै वाळो है ॥

चाहे जितणो लूटले बन्दे,
यो खाली नहीं होणै को,
धीरे-धीरे, सबको नम्बर,
आणै वाळो है ॥

श्यामधणी सजधज कर बैठ्या,
मंद-मंद मुस्कावै जी,
भगतां की किस्मत को ताळो,
खुलणै वाळो है ॥

खाटू नगरी को राजा है,
जगत सेठ कहलावै रे,
'बनवारी' यो सबकी झोली,
भरणै वाळो है ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

बाबा श्याम को म्है प्रेम सैं,
निशान ल्याया रे ।

बालक बूढ़ा वीर गाबरू,
सबकै चाव घणैरो रे,
पहन बसंती चोला सेवक,
बोल्या आया रे ॥

लहर-लहर लहराता आवै,
ये निशान अलबेला जी,
खाटुवाळा श्यामधणी की,
मोटी माया जी ॥

बाजै चंग-नगाड़ा मिलकै,
गावै राग सुरंगी जी,
रंग रंगीला फैटा केसर,
तिलक लगाया जी ॥

अपनी धुन मं मगन होयकर,
भगतां घालै फेरी जी,
देख निशान धणी का सबका,
मन हर्षाया जी ॥

श्यामबहादुर खाटुवाळो,
श्याम बड़ो सैलाणी जी,
श्याम परिवार का टाबरिया,
'शिव' हर जस गाया जी ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

डोरी खैंच कै राखिजे यो है बाबे को निशान
पैदल चालणिये के सागै चाले बाबो श्याम ।

श्याम को निशान बड़भागी उठावे
किस्मत वारो खाटू जावे
सारे रास्ता मं करतो रहजे ऐंकों गुणगान ।

श्याम धणी तेरो रखवालो,
तेरी झोली भरने वालो
लाम्बी खाइजे तू धोक, तेरो होसी कल्याण ।

श्याम तेरे साग-साग मतना घबरावे
धीरे-धीरे चाल वो ही पार लगावे
तन्ने ज्यादा क समझाऊँ ऐंकी महिमा न पिछाण ।

रींगस खाटू बगल-बगल में
चाल जरा सो उछल-उछल के
बेगो चाल रे बनवारी आग्यो-आग्यो खाटू धाम ।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

प्यारो लागै ओ श्री श्याम,
थारो केशरिया निशान ॥

फागण कै महीनै मं बाबा,
भोत चाव सै उठावां जी,
भगतां थारा पैदल चालै, सागै-सागै जी ॥

प्यारो लागै ओ श्री श्याम...

एक हाथ मं लाठी पकडां,
एक हाथ मं डोरी जी,
आपस मांही भगतां थारा, घूमर घालै जी ॥

प्यारो लागै ओ श्री श्याम...

गोल चकरियो बणा कै बाबा,
थानै भजन सुणावां जी,
'बनवारी' जद जोर सैं नाचां, धरती हालै जी ॥

प्यारो लागै ओ श्री श्याम...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : बैद्यो खाटू मं लगाकर दरबार...)

गाजै-बाजै सुं बुलाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

कई दिनां सुं मन मं लागी,
जावां खाटू धाम,
एक-एक दिन गिण-गिण कर काटां,
कैंयां दीखै श्याम,
म्हानै बेगो सो बुलाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ।

फागण मास रंगीलो थारो,
भगतां कै मन भावै,
फागण कै मेले के मांही,
नाच-कूदता आवै,
म्हानै हिवडै सं लगाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

श्याम धणी सं आस घणी,
ओ भगतां को प्रतिपाल,
महर करो सेवक कै ऊपर,
दरशन दयो हर साल,
म्हानै चरणां सं लिपटाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

आलूसिंह पर किरपा थारी,
रोज करै सिणगार,
केसर-तिलक लगावै थारै,
अन्तर की भरमार,
देवै चोखा-चोखा सबनै वरदान,
आयो महीनों फागण को ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तेरी दुनिया से दूर...)

साँचो थारो दरबार, सेवक आयो थारै द्वार,
बाबा ध्यान रखना ।

घुम्यो सारी दुनिया, मिल्यो ना कोई साथी, जो कहैव अपना,
संता स सुनी हाँ, साँचो इक साथी, इक श्याम अपना
श्री श्याम अपना, जग झूठा सपना ॥१॥

बाबा थारो टाबर, बड़ो ही दुखियारो, सतावै है जहाँ,
थे ही मेरा सब कुछ, पिता और माता, मैं जाऊँगा कहाँ,
मैं जाऊँगा कहाँ, बस रहूँगा यहाँ ॥२॥

लाखों की बनाया हो, मेरा भी संवारोगा, का रज जरूर,
मेरी छोटी नैया, खावै है हिचकोला, ओ मेरे हुजूर,
ओ मेरे हुजूर, माफ करना कुसूर... ॥३॥

फूँला स संजावा, थारी या फुलवारी, पधारो घन श्याम,
भगतां बीच बैठो, सुनो थे सैंकी अर्जी जो लेवे थारो नाम,
जो लेवे थारो नाम, श्री श्याम-श्याम-श्याम ॥ साँचो... ॥४॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तेरे मेरे होंठों पे...)

सांवरे सलौने से, जब से मेरी प्रीत हो गई,
हारा हुआ था मैं, अब तो मेरी जीत हो गई ।।टेर ।।

फागुन में पहली बार, हाथों में निशान ले गया,
उस दिन से सांवरिया, मुझ पे मेहरबान हो गया,
जिंदगी से दूर सारी, मेरी तकलीफ हो गई ।। १ ।।

जिस दिन से भजनों को, श्याम तेरे गाने लगा,
उस दिन से सपनों में, श्याम मेरे आने लगा,
सुरताल से सज गई, जिंदगी संगीत हो गई ।। २ ।।

जिस दिन किया कीर्तन, घर पे अपने पहली बार,
'श्याम' के संग मिल गया, मुझको नया परिवार,
भजनों की ये दुनिया, मेरी मन मीत हो गई ।। ३ ।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : यारी हो गई यार से...)

कुछ तो है सरकार तेरी सरकारी में
क्या रखा है झुठी दुनियादारी में
कुछ तो है साँवरे तेरी यारी में... ॥

दो पहलू संसार के, दो रुख वाली रीत
दिन अच्छे तो सब मिले बुरे दिन मिले ना मीत
साथ तेरा मिले-२ लाचारी में ... ॥

मैंने बस गुणगान किया तुने दिया वरदान
दानी तुझसा और नहीं दी अपनी पहचान
मिला सब है तेरी-२ दातारी में... ॥

मौसम-सा बदले यहाँ लोगों का व्यवहार
झुठे रिश्ते झुठे नाते झुठा है संसार
है भरोसे तेरी-२ रिश्तेदारी में... ॥

हरदम रहना साथ तू बन निर्मल की ढाल
मेरा जो रक्षक है तु जग की क्या है मजाल
मैं रहूँ खुश तेरी-२ दरबारी में... ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा - अहिलवती के लाल को, है सच्चो दरबार ।

जो कोई सुमरे प्रेम से, करदे बेड़ा पार ॥

(तर्ज - इक परदेशी मेरा दिल...)

साँवरे दातार ने कमाल कर दिया

जो भी आया दर पे मालामाल कर दिया ॥ टेरे ॥

बड़ी ही पुरानी मेरे श्याम की कहानी

शीश दान दे के बना शीश का दानी-२

बात राखी कृष्ण को निहाल कर दिया ॥ १ ॥

दानियों में दानी मेरा श्याम खादू वाला है

बड़ा दिलदार सारे देवों में निराला है-२

सुनके अरजी काम तत्काल कर दिया ॥ २ ॥

दीनों को सहारा दे के सुख बरसाता

जिसका ना कोई उसे गले से लगाता-२

भक्तों का तो पूरा हर सवाल कर दिया ॥ ३ ॥

मान दे सम्मान दे ये भरे भण्डारे

‘मातृदत्त’ श्याम सुन्दर बिगड़ी सँवारे-२

दुष्टों का तो हाल ही बेहाल कर दिया ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

साँवरे बिन तुम्हारे कि जी ना लगे
आओ पास हमारे कि जी ना लगे ।

भजन सुनाने तुझको रिझाने आया साँवरे
तुम ना सुनो तो किसको सुनाऊँ बोलो साँवरे
फीके साज ये सारे कि जी ना लागे... ॥ साँवरे...

भगतों ने मिलकर दर को सजाया प्यारे साँवरे
चाँदनी कैसी बिन चन्द्रा के बोलो साँवरे
फीके चाँद सितारे कि जी ना लगे... ॥ साँवरे...

कुछ नहीं चाहूँ तुझसे ओ बाबा बस आइये
सामने मेरे बैठ के बाबा मुस्कुराइये
नन्दु प्रेम पुकारे ये जी न लगे.... ॥ साँवरे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : उनसे मिली नजर कि मेरे...)

जब से मिली शरण, कि मेरे दिन बदल गये,
ऐसी लगी लगन, कि मेरे दिन बदल गये ॥

खाटू जो पहुँचा पहली बार, मन को लुभाया ये दरबार,
हूक सी दिल में उठने लगी, श्याम से हो गया मुझको प्यार
झुक कर किया नमन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे...

श्याम ने सिर पर हाथ धरा, बोझ मेरे सिर का उतरा,
कृपा श्याम ने बरसाई, बाग़ हो गया हरा-भरा,
महका मेरा चमन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे...

अब जीवन में मस्ती है, मेरी सुखी गृहस्थी है,
जो आनन्द में लेता हूँ, दुनिया उसे तरसती है,
रहता हूँ मैं मगन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे...

श्याम के दर पे आता हूँ, कुछ लेकर ही जाता हूँ,
'बिन्नु' कहता इसीलिए, श्याम तराने गाता हूँ,
करता हूँ मैं भजन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : ग्यारस चानण की आई...)

बरसां सु यो दिन आयो, हिवड़े में हेत समायो,
ठाकुर पधार्या म्हारे आंगणा ॥ टेर ॥

मोर मुकुट में थारे 'सोवे किलंगी जी' - २
घेर घुमेर बागो, 'आभा सतरंगी जी' - २
सेवकिया चंवर दुलावे, सगला मिल महिमा गावे ।
साज सुरीला बाजे, बाजणा ॥ १ ॥

थार गले में सोवे, 'हार हजारी जी' - २
फूलां का गजरा जांकी, 'शोभा है भारी जी' - २
अन्तर की बरखा होवे, झांकी सैंको मन मोहे,
नर-नारी आया म्हारे बारणा ॥ २ ॥

ऊँचे आसण पर बाबा, 'श्याम बिराजे जी' - २,
कानां में सोणा-२, 'कुण्डलिया साजे जी' - २,
भगतां सूं प्रीत निभाई, अरजी की करी सुणाई,
'हर्ष' पधार्या म्हारे, पावणा ॥ ३ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

कदै आँख फड़कै, कदै आवे हिचकी,
कदै कागलो मुँडेर उपर बोल रह्यो ।
आजा आजा रे साँवरिया हिवड़ो डोल रह्यो ॥

थारे बिना नहीं बीते दिन महारा सांवरां,
रात कांटा म्हे तो तारा गिण गिण साँवरा,
म्हारी जिन्दगी क्यूं माटी माही रोड़ रह्यो ॥ आज्या...

दुनियां की प्रीत तो निभावे बड़े ठाट से,
नरसी क गयो कदै गयो धन्ना जाट के,
साँची प्रीत न क्यूं सांवरा टटोल रह्यो ॥ आज्या...

सुनल्यो साँवरिया जीवन डोर थारे हाथां मं,
बोलो कांई कसर नजर आई बातां मं,
म्हारी बात न क्यूं ताखड़ी मं तोल रह्यो ॥ आज्या...

टाबरिया नादान है श्याम सुन्दर जाण ले,
म्हे तो थारा ही रहवांगा बात म्हारी मान ले,
झूठ बोलुं कोनी, साँची साँची बोल रह्यो ॥ आज्या...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

धमाल

कसनो छोड़ दे साँवरिया, मं तो हार गयो रे,
कसनो छोड़ दे ।

थक गयो मं तो विनती करके-२ हार गयो रे कसनो छोड़ दे ।

जितनी तेरी माला फेरूँ, उतनो ही कसतो जावे रे-२
जितना तैने भजन सुनाऊँ-२, उतनो रुलावे रे... ॥१॥

जितना तेरा लाड लडाऊँ, उतनो ही टेढ़ो रहवे रे-२
बोल साँवरिया अइयाँ-कइयाँ-२, प्रीत निभावे रे... ॥२॥

या के तने बान पड़ी है, हरदम कसतो रहवे रे-२
जीव दुःखाकर म्हारो तनै, मजो के आवे रे... ॥३॥

यो कलियुग है बनवारी तू इतनो, कस-बल छोड़ दे-२
वरना तेरा टाबरिया-२, तने ओलमो देसी रे... ॥४॥

कुन कहसी तनै दीन दयालु दीननपति हितकारी जी-२
प्रेम का मीठा ताना सुन के-२, श्याम मुलके रे... ॥५॥

कोई दिन तो सेठ साँवरा, भगतां का होना चाहिए रे-२
म्हें जो चावां वो ही पावां-२, झोली भर-भर के... ॥६॥

मैंने अपनी बात बता दी, आगे मरजी तेरी है-२
'रेनु' की लाज तेरे हाथां में, याद रखिजे रे,... ॥७॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : नैन रतनारा तेरा...)

बोलो जी दयालु दिलदार के करुँ ।

बोलो बोलो थारी, मनुहार के करुँ ॥

मन को नगीनों, थानै सूप दियो ।

जाण कै दरद प्रभु, मोल लियो ।

जीत और हार को विचार के करुँ ॥ बोलो-बोलो ॥

मेरे कने थे काँई छोड़यो है,

छलिये सूँरिश्तो जोड़यो है,

नेहड़ो लगाके तकरार के करुँ ॥ बोलो-बोलो ॥

फाँस लियो मीठी-मीठी बातों में,

बिक गयो जीव थारै हाथाँ में,

थारे सै अकड़ करतार के करुँ ॥ बोलो-बोलो ॥

जाण कै गरीब क्यूँई रहम करो,

विनती पर मेरी प्रभु ध्यान धरो,

जीवन की पतवार के, रखवार के करुँ ॥ बोलो-बोलो ॥

श्याम बहादुर 'शिव' रसिया,

हँस बतलाओ मेरे मन बसिया,

लागी मेरे नेह की कटार के करुँ ॥ बोलो-बोलो ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तेरे बिन श्याम हमारा नहीं कोई रे...)

कैंया रीझै श्याम, रिझाणो कोनी जाणू मैं,
रिझाणो कोनी जाणू मैं, लुभाणो कोनी जाणू मैं ॥

कोई तो पहरावै इनै बागा चमकणिया,
मोटा-मोटा फुलड़ां का हार महकणिया,
सोणा-सोणा श्याम नै, सजाणो कोनी जाणू मैं ॥

कैंया रीझै श्याम, रिझाणो...

खीर-चूरमा को भोग लगाऊँ,
छप्पन भोग सजाकर ल्याऊँ,
करमां को सो खीचड़ो, खुवाणो कोनी जाणू मैं ॥

कैंया रीझै श्याम, रिझाणो...

नया-नया नित की भजन सुणाऊँ,
ढोल-मजीरा भी खूब बजाऊँ,
नरसी जैसा भाव, जगाणो कोनी जाणू मैं ॥

कैंया रीझै श्याम, रिझाणो...

साँची-साँची प्रीत ही श्याम नै भावै,
'बिन्नू' कैंया श्याम नै रिझावै,
मीरां जैसी प्रीत, लगाणो कोनी जाणू मैं ॥

कैंया रीझै श्याम, रिझाणो...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा-आणो हो तो आव रै, मतना कर मनै तंग ।
नहीं आवगो तो देखले, आज मचगो जंग ।

खाटू को श्याम रंगीलो रे खाटू को ॥ टेर ॥

ऐसो तो रंगीलो छैलो और न देख्यो ।
देख्यो एक हठीलो रै खाटू को ॥ खाटू को ॥

खाटू को श्याम बड़ो ही रंग रसियो ।
रसियो मेरे मन बसियो रै खाटू को ॥ खाटू को ॥

वंशी बजावै छैलो लुल लुल गावै ।
गावै तान रसीलो रै खाटू को ॥ खाटू को ॥

आप भी नाचै छैलो भगत नचावै ।
नाचे-नाच नचावै रै खाटू को ॥ खाटू को ॥

नाचत-नाचत भयो मतवारो ।
मतवारो श्याम हमारो रै खाटू को ॥ खाटू को ॥

“श्याम बहादुर” श्याम रंगीलो ।
यो तो भगतां को रखवारो रै ॥ खाटू को ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : धमाल...)

पैदल आस्यां ओ साँवरिया थारी खादू नगरी ॥

घणा दिनां सैं आस लाग रही,
श्याम का दर्शन करस्यां हो,
श्याम धणी थे महर करो, सालूणा आस्यां हो ॥
पैदल आस्यां ओ साँवरिया...

खादू वाळा खारडै का,
टेढ़ा-मेढ़ा गेला हो,
फिर भी मनड़ो मानै कोनी, दर्शन करस्यां हो ॥
पैदल आस्यां ओ साँवरिया...

श्याम मंडल कै सागै बाबा,
नाच-कूदता आस्यां हो,
टाबरियां की लाज राखिये, भजन सुणास्यां हो ॥
पैदल आस्यां ओ साँवरिया...

भगतां नै भी ल्यास्यां सागै,
घरकां नै भी ल्यास्यां हो,
कहे 'बनवारी' रंग-बिरंगी, ध्वजा चढ़ास्यां हो ॥
पैदल आस्यां ओ साँवरिया...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : आ लौट के आज मेरे मीत...)

हे बांकेबिहारी लाल,
मन्नै थारी याद सतावै है,
हिचक्यां ना रुकै गोपाल,
कालजो भर-भर आवै है ॥

बांकी सी लटक, गई मन मं अटक,
थे कद-सी दरस दिखाओगा,
लागी चटक, गई आँख्यां भटक,
मन्नै थे ही धीर बँधाओगा,
मेरी बिनती सुणो जी नन्दलाल ।
मन्नै थारी याद सतावै है...

जीवन धन, मिलणै की लगन,
थे मतना जीव दुखाओ जी,
नील गगन सो, थारो बदन,
मन्नै दरशन श्याम कराओ जी,
थानै न्यूत जिमास्यूं थाळ ।
मन्नै थारी याद सतावै है...

हरयै बांस की बांसुरिया गूँजी,
जीव मेरो भरमायो,
धेनू चरैया रास रचैया,
दिन-दिन दरद सवायो,
थारै गळ वैजयंती माळ ।
मन्नै थारी याद सतावै है...

श्यामबहादुर दर को भिखारी,
'शिव' थारो चाकरियो,
एक झलक दिखलाकै दयालु,
बेगा मनस्या भरियो,
मेरो पूरो करो जी सवाल ।
मन्नै थारी याद सतावै है...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

म्हारे सिर पर है बाबा जी रो हाथ,
खाटू वाले रो साथ, कोई तो म्हारो कांई करसी ॥

कोई तो म्हारो कांई करसी-२

जै कोई म्हारे श्याम धणी नै, सांचे मन स ध्यावे,
काल कपाल भी सांवरिये के, भक्तां से घबरावे,
जै कोई पकड़यो है बाबा जी रो हाथ, कोई तो बांको कांई करसी ॥

जो आपै विश्वास करै वो, खूंटी तान कै सोवे,
बठै प्रवेश करे ना कोई, बाल ना बांका होवै,
जांके मन म नहीं है विश्वास, बांको तो बाबो कांई करसी ॥

कलयुग को यो देव बड़ो, दुनिया में नाम कमायो,
जद जद भीड़ पड़ी भक्तां पर, दौड़यो दौड़यो आयो,
यो तो घट की जाने सारी बात, कोई तो म्हारो कांई करसी ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : वो जब याद आये बहुत याद आये...)

श्याम नै सुणादे, तेरे मन की बातां,
देर भले अंधेर नहीं है,
खबर सैंकी लेवै सदा आतां-जातां ॥

नानी बाई को भात भरयो सांवरो,
विष नै अमृत करयो यो मेरो सांवरो,
ऐंकी दया को छोर नहीं है,
यो ही तो है सैंको भाग्य विधाता ॥१॥

जिन्दगी एक बार मोड़कर देखलै,
तार सैं तार तूं जोड़कर देखलै,
मस्ती मिलैगी ऐसी कल्पना के बाहर,
प्रेमियों को कान्हा है सदा चाहता ॥२॥

श्याम ही अपना तन-मन-धन, श्याम बिना नीरस जीवन,
रस का श्रोत श्याम सुमिरण, करते रहो नाम चिन्तन
धीरे-धीरे दूरी घटती रहेगी,
महसूस होगा ये पास आता ॥३॥

जब तक कुछ आभास ना हो, समझो कुछ भी मिला नहीं
सेवा में है कमी नहीं इसको किसी से गिला नहीं
अनदेखी कान्हा करता ही रहता
सांवरे को सेवक दुखी ना सुहाता ॥४॥

आमने सामने जब बैठो, फिर तो कोई बात बने,
सूर श्याम जैसे मिलते, अपनी भी मुलाकात बने
आपस में कुछ भी कहेंगे-सुनेंगे,
ना जाने कितनी बीतेंगी रातां ॥५॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

थासूँ विनती करां हां बारम्बार
सुणोजी सरकार खादू का राजा महर करो ।
महर करो जी अबकी बेर करो थे मतना देर करो ॥

थां बिन नाथ अनाथ की जी कुण राखेलो टेक
म्हासां थाके मोकला जी-२ थांसा तो म्हारे थे ही एक
खादू का राजा...

जाणूँ हूँ-दरबार में थारे घणी लगी है भीड़
थारो बिन किस-विध मिटेगी-२ भोले भगत की या पीड़
खादू का राजा...

ज्यूँ-ज्यूँ बीते टेम हियो को छुट्यो जावे धीर
उछलो आवे कालजो जी-२ नैना सूँ टप-२ टपके नीर
खादू का राजा...

साथी म्हारे जीव का थे थाँसू छानी नाय
जाण बुझ के मत तरसाओ-२ हिड़वे से लियो लिपटाय
खादू का राजा...

दुपद-सुता की लज्जा राखी गज का फाट्यो फंद
सुणकर टेर बेर मत की ज्यो-२ श्याम बिहारी वृजचन्द
खादू का राजा...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

हो म्हारे जद भी मुसीबत कोई आवण लागे-२,
म्हार सर के ऊपर मोरछड़ी लहरावण लगे ॥

जब जब गाड़ी खाव झटका,
मोरछड़ी का लागे फटका,
अपण आप ही या गाड़ी म्हारी, भागण लागै ॥ १ ॥

हो गया दिवाना मैं तो, मोर छड़ी का,
गुण कोन्या भूलूँ मैं तो, श्याम धणी का,
भगतां खातर नया नया रस्ता, काडण लागै ॥ २ ॥

मोरछड़ी का देख्या र जादू,
भूल गया मन्तर, स्याणा साधु,
बैं भी झुक-झुक झाड़ा, लगवावण लागे ॥ ३ ॥

जी क घर म मोर की छड़ी है,
'बनवारी' किस्मत, भोत बड़ी है,
झाड़ो देवण ताई श्याम घर, आवण लागे ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे...)

मन की बातां सांवरियै नै, आज सुणाकै देखले,
सुणसी-सुणसी साँवरो तूं, टेर लगाकै देखले ॥

गली-गली क्यूँ भटक रह्यो तूं, श्याम खड्यो तेरे आगै,
तेरी पीड़ा बो ही हरैगो, चालैगो तेरे सागै,
गैलो टेढ़ो, बाबो सीधो, बदलै भाग्य की रेख रे ॥

मन की बातां साँवरिया नै...

दुनिया सैं के आस करै है, श्याम ही सांचो साथी,
मन दिवलै नै जगमग करले, घाल प्रेम की बाती,
रोम-रोम मं श्याम रमाले, फेर तमाशो देखले ॥

मन की बातां साँवरिया नै...

खाटू मांही लगी कचहरी, श्याम करै सुणवाई,
साँचो न्याय चुकातो आयो, जाणै पीड़ पराई,
'अनिल' सुणादे बातां सारी, चरणां माथो टेकले ॥

मन की बातां साँवरिया नै...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : रसिया)

चंदन को छिड़काव केसर चंदन को छिड़काव-२
हो रह्यो बाबा की नगरी में, केसर चंदन को छिड़काव ।

वाह रे वाह फागण अलबेला-२
श्याम धणी का भरता मेला-२
वायुमण्डल भया सुनहेला-२
चाकरियों हो श्याम चरण को, मन में मोटो चाव-२
हो रह्यो बाबा की नगरी में, केसर चंदन को छिड़काव ॥

मंदरिये में जमकर कूद्यो-२
रुह गुलाब को झरणों छूट्यो-२
प्रीत करी सोई जस लूट्यो-२
बड़भागी ने हुयो अनुठो दाता को दरसाव-२
हो रह्यो बाबा की नगरी में, केसर चंदन को छिड़काव ॥

महकन लाग्यो देश दुंदारो-२
खोल दियो बाबो भण्डारो-२
सुफल हो गयो मिनख जमारो-२
बनै यो दिल से सिण्गार्यो, जैसे भयो लगाव-२

श्याम बहादुर शिव फरियादी-२
श्याम नाम की नींव लगा दी-२
मन मंदिर मैं ज्योत जगा दी-२
एक झलक अपनी दर्शादी, मिल्या हृदय का भाव-२
हो रह्यो बाबा की नगरी में, केसर चंदन को छिड़काव ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

जब से देखा तुम्हें, जाने क्या हो गया
ए खादु वाले श्याम मैं तेरा हो गया ।

तू दाता है तेरा पुजारी हूँ मैं
तेरे दर का ए बाबा भिखारी हूँ मैं
तेरी चौखट पे दिल है मेरा खो गया
ए मुरलीवाले श्याम मैं तेरा हो गया ।

जब से मुझको ए श्याम तेरी भक्ति मिली
मेरे मुरझाये मन में है कलियाँ खिली
जो ना सोचा कभी था वही हो गया
ए लीले वाले श्याम मैं तेरा हो गया ।

तेरे दरबार की वाह अजब शान है
जो भी देखे वो ही तुझपे कुर्बान है
तेरी भक्ति का मुझको नशा हो गया
ए खादू वाले श्याम मैं तेरा हो गया ।

‘शर्मा’ जब तेरी झांकी का दरसन किया
तेरे चरणों में तन-मन ये अर्पण किया
इक दफा तेरी नगरी में जो भी गया
ए मुरली वाले श्याम मैं तेरा हो गया ।

“ओल्यू”

ओ जी ओ मिजाजी म्हारा सांवरिया,
थारी बाबा ओल्यूं आव, बेगा आवोजी सांवरा ॥ टेरे ॥

थानै तो मनावं घणां चाव सूं,
थे हंस हँस कंठ लगावो ना तरसावो जी सांवरा ॥ १ ॥

ई दुनिया सूं न्यारो थारो देवरो,
थे रतन सिंहासन बैठ्या हुक्म सुनावो जी सांवरा ॥ २ ॥

नैणा माई छलकै थारो नेहड़ो,
थारा टाबरिया रा अटक्या काम बनाओ जी सांवरा ॥ ३ ॥

भूल्यां थारा टाबरिया न नाहीं सरै,
थारी जादूगारी मुरली आज बजाओ जी सांवरा ॥ ४ ॥

भूलेड़ा भटक्यां न थारो आसरो,
म्हारी नैया नाथ पुरानी पार लगाओ जी सांवरा ॥ ५ ॥

जागरणों ग्यारस की चाँदनी रात को,
कोई बारस न थे खीर चूरमों खावो जी सांवरा ॥ ६ ॥

जीम्यां पीछ थार हाथ धुवायस्यां,
ल्यो दो बीड़ा थे मगही पान चबाओ जी सांवरा ॥ ७ ॥

शर्मा ‘काशीराम’ थारो बालकियो,
थारै कहया-कहया हुक्म उठावे, कांड़ फरमाओ जी सांवरा ॥ ८ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तावड़ो मंदो पड़ज्या रे...)

श्याम थारी ओल्यूं आवै जी,
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥

रंग बसंती फीको लागै, केसर की क्यारी,
मोर-पपीहा की बोली भी, लाग रही खारी,
श्याम म्हानै कुछ ना भावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥

बेगा आओ किशन-कन्हाई, राह तक्कू थारी,
थां बिन धीर धरै ना मनड़ो, मोहन गिरधारी,
धीर अब कौण बंधावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥

आओ रंग-गुलाल हाथ मं, लेकर पिचकारी,
'शर्मा' कै सागै बाबा खेलो, होली मतवाली,
गीत फागण का गावै जी ।
बीत फागण ना जावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : तुम झोली भरलो...)

कैसा जादू साँवरिया, है तेरे प्यार में
दीवाने होकर नाचे, तेरे दरबार में ।

तेरी भोली-भोली सूरत मन में प्रीत जगावे-२
आते ही दरबार में तेरे सब दुखड़े मिट जावे-२
भाता न फिर तो कोई, दूजा संसार में । दीवाने... ॥१॥

कजरारे ये नैन तुम्हारे, दिल पे तीर चलाये-२
जिस पर मुस्कान तुम्हारी, घायल ही कर जाये-२
सुध-बुध बिसरायी अपनी, तेरे दीदार में । दीवाने... ॥२॥

अपने भगतों पर तू कान्हा, इतना प्यार लुटाये-२
भूल के सारी दुनियादारी, हम तेरे हो जायें-२
सोनू बंध जाते तेरे, प्रेम के तार में । दीवाने... ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : किर्तन की है रात...)

जाके सिर पर हाथ, जाके सिर पर हाथ
म्हारै श्याम धणी को होवे है
बाको बाल ना बाँकों होवे है, जाके सिर पर हाथ ॥टेर ॥

कलयुग में बाबा का, घर घर बजे डंका, बड़े बलकारी हैं,
जो भाव स ध्यावे, पल भर म है आवै, करै ना देरी है,
जांका जैसा भाव-२ बाबो वैसो ही फल देवे है-२

जाके सिर...॥१॥

एक बार जावोगा, हर साल जावोगा, बाबा क मेले में
आनंद ही आनंद, अमृत की हो वर्षा, खाटू क गेले में
लेकर आंको नाम-२, जो भी पैदल खाटू जावे है

जाके सिर...॥२॥

दुनिया की मस्ती म, मत भूल बाबा न, यो हीतेरे काम को,
जैया मनावोगा, यो मान जावेगो, भूखो है थारे भाव को
'शुभम रूपम' परिवार-२ ऐंको टान क खुटी सोवे है

जाके सिर...॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा - फागण मं श्री श्याम को खूब सज्यो दरबार ।
धरती अम्बर झूम रया, झूम उठयो सँसार ॥

(तर्ज : धमाल...)

बाबा श्याम क दरबार मची रे होली बाबा श्याम क ॥ टेरे ॥

कै मण लाल गुलाल उड़त है
तो कै मण केशर कस्तूरी
बाबा श्याम.... ॥ १ ॥

कुण जी र हाथां मं रँग कटोरो
तो कुण जी र हाथां मं पिचकारी
बाबा श्याम.... ॥ २ ॥

भगतां र हाथां मं रँग कटोरो
तो श्याम जी क हाथां मं पिचकारी
बाबा श्याम.... ॥ ३ ॥

होली की मस्ती मं सगला नाचे
तो संग नाचे गिरवर धारी
बाबा श्याम... ॥ ४ ॥

॥ राधा रानी ॥

मेरी विनती यही है राधा रानी, कृपा बरसाए रखना
ओ मुझे तेरा ही सहारा महारानी-२, चरणों से लिपटाए रखना
कृपा बरसाए... ।।टेर।।

छोड़ दुनिया के झूठे सारे नाते,
किशोरी तेरे दर पे आया
मैंने तुमको पुकारा ब्रजरानी-२
कि जग से बचाए रखना
कृपा बरसाए... ।।१।।

इन सासों की माला पे मैं
सदा ही तेरे नाम सिमरूं-४
लागी राधा श्री राधा नाम वाली - २
लगन ये लगाए रखना
कृपा बरसाए... ।।२।।

श्री राधाSS श्री राधाSS-८
तेरे नाम के रंग में रंग के,
मैं डोलूं ब्रज गलियन में-४
कहे चित्र विचित्र श्यामा प्यारी-२
वृन्दावन बसाए रखना
कृपा बरसाए... ।।३।।

॥ श्री राधे वन्दना ॥

राधे तेरे चरणों की, श्यामा तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये ।

सच कहता हूं बस मेरी तकदीर संवर जाये ॥

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है ।

एक बूंद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये ॥ १ ॥

ये मन बड़ा चंचल है, तेरा भजन करूं कैसे ।

इसे जितना समझाऊं, उतना ही मचल जाये ॥ २ ॥

नजरो से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना ।

नजरो से जो गिर जाये, मुश्किल ही सम्हल पावे ॥ ३ ॥

राधे इस जीवन की बस एक तमन्ना है ।

तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

नैणा नीचा करले श्याम से मिलावली कंईया ।

तीखा तीखा नैणा मांही झिनो झिनो सुरमो ।
हाये राधे नैणा से नैण मिलावली कंईया ॥ १ ॥

पतला - पतला होंठा ऊपर गहरी गहरी लाली ।
हाये राधे मुलक-मुलक बतलावली कंईया ॥ २ ॥

गोरा गोरा हाथां मांही रच रही मेहन्दी ।
हाये राधे झालों तो देर बुलावली कंईया ॥ ३ ॥

गोरी - गोरी बैयां मांही हरयो हरयो चुड़लो ।
हाये राधे बैयां से बैयां मिलावली कंईया ॥ ४ ॥

सुन्दर सुन्दर पगल्यां मांही झीणी झीणी पायल ।
हाये राधे पगल्यां से पगल्यां मिलावली कंईया ॥ ५ ॥

चन्द्र सखि भज बाल कृष्ण छवि ।
हाये राधे चरण कमल चित ल्यावली कंईया ॥ ६ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : एक तेरा साथ....)

सांवरियो है सेठ म्हारी राधाजी सेठानी है
या सारी दुनिया जानी है ॥ टेर ॥

राजाओं के राजा महारानी की रानी, सिर मोर मुकुट साजे,
जोड़ी बड़ी प्यारी दरबार है प्यारा, राधा के संग साजे ओSSS
सोने पलने सेठ सोने पलने में सेठानी है ॥१॥

सांवरिया राधाजी भगतां पे है राजी, करे धणो लाड है
भण्ठार लुटावे है हर बात बनावे है भगतां रा ठाठ है
देवे छप्पर फाड़ नहीं इनसो कोई दानी है, या तो... ॥२॥

सुख दुःख में, सांवरियाँ सुख-दुःख में राधाजी सदा तेरे साथ है
तेरी चिन्ता दूर करे तेरी विपदा दूर को रखलेवे बात है
भक्तां रो तो काम, बस एक हाजरी लगानी है, या तो... ॥३॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी रखोगे लाज,
मीरां के घनश्यामजी, मेरी रखोगे लाज ॥

एक भरोसो थारो है, तूं ही पत राखणवारो है,
छोटो सो मेरो काम जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी...

टेर सुणो सांवलशा मेरी, धीर बंधाओ करो ना देरी,
दुःखहर्ता थारो नाम जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी...

भीख दया की कब दोगे, मेरी सुध प्रभु कब लोगे,
पूजूँ मैं थारा पाँव जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी...

काशी चरणां को चेरो, जीवन सफल बना मेरो,
थां बिन कित आरामजी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी मेरी...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : प्राइवेट...)

एकली खड़ी रे मीरा बाई एकली खड़ी ।

ओ मोहन आओ तो सही, गिरिधर आओ तो सही ।
माधव रे मन्दिर में मीराबाई, एकली खड़ी ॥ टेर ॥

थे कहो तो साँवरा मैं, मोर मुकुट बन जाऊँ,
पहरन लागे साँवरो रे, मस्तक पर रम जाऊँ ॥ १ ॥

थे कहो तो साँवरा मैं, काजलियो बन जाऊँ,
नैन लगावे साँवरो रे, नैणा में रम जाऊँ ॥ २ ॥

थे कहो तो साँवरा मैं, जल जमना बन जाऊँ,
नहावन लागे साँवरो रे, अंग-२ रम जाऊँ रे ॥ ३ ॥

थे कहो तो साँवरा मैं, पुष्प हार बन जाऊँ,
कण्ठ में पहरे साँवरो रे, हिवड़ै पर रम जाऊँ रे ॥ ४ ॥

थे कहो तो साँवरा मैं, पग पायल बन जाऊँ,
पहरन लागे साँवरो जद चरणां मं रम जाऊँ ॥ ५ ॥

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादां...)

दरबार हजारों है ऐसा दरबार कहाँ,
जो श्याम से मिलता है, वो मिलता प्यार कहाँ ।।टेर।।

जो आश लगा कर के, दरबार में आता है,
खाली झोली आता, भर कर ले जाता है,
माँगे सो मिल जाये, ऐसा भण्डार कहाँ ।।१।।

सब के मन की बातें, बड़े ध्यान से सुनता है,
फरियाद सुने बाबा, और पूरी करता है,
जहाँ सब की सुनाई हो, ऐसी सरकार कहाँ ।।२।।

कोई प्रेमी बाबा का, जब हमको मिल जाये,
सब रिश्तों से बढ़ कर, एक रिश्ता बन जाये,
ये श्याम धणी का है, ऐसा परिवार कहाँ ।।३।।

“बिन्नू” ने जो चाहा दरबार से पाया है,
यहीं अपना सब कुछ है संसार पराया है,
इसे छोड़ मेरा सपना, होगा साकार कहाँ ।।४।।

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

(तर्ज : राजस्थानी...)

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम,
खाटूवाळा श्याम, म्हारा लीलै वाळा श्याम,
भटक्यां नै राह दिखा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारी टेर सुणो थे अबकी, म्हारी नाव भँवर मं अटकी,
अटकी नै पार लगा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

है एक आसरो थारो, नहीं और कोई है म्हारो
विपदा मं साथ निभा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

दुनिया मं तेज तिहारो, चम-चम चमकै उजियारो,
जीवन मं ज्योत जळा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

म्हारै मन मं आशा जागी, थारै नाम की लगन है लागी,
म्हारै मन का कष्ट मिटा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

बाबा इतना ना तरसाओ, कुछ तरस मेरे पर खाओ,
बीती बातां नै भूला दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

थे लखदातार कहाओ, लीलै पर चढ़कर आओ,
भगतां नै दरस दिखा दीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

घर-घर मं चर्चा थारी, थे दीन-दुःखी हितकारी,
इस बालक नै अपना लीज्यो, खाटूवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो...

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

श्याम बाबा, श्याम बाबा, तेरे पास आया हूँ,
चरणों में तेरे अरदास लाया हूँ ॥ टेर ॥

सच्चा है दरबार तुम्हारा, संकट काटो श्याम हमारा,
जब जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, दाता नगें पावँ पधारा,
दुख हरना, मेरा दुख हरना, तेरा गुण गाया हूँ ॥ १ ॥

दीन दयाल दया के सागर, फिर क्यूँ खाली मेरी गागर,
विनती मेरी तुम सुन लेना, श्याम मुरारी हे नट नागर,
भर देना, झोली भर देना, यही आस लाया हूँ ॥ २ ॥

जब फाल्गुन का मेला आये, हमको पास बुलाना होगा,
मैं मारूँगा भर पिचकारी, तुमको रंग लगाना होगा,
खेलूँगा, होली खेलूँगा, रंग गुलाल लाया हूँ ॥ ३ ॥

जब जब तेरी याद सताये, श्याम सुन्दर नैनों में छाए,
'सब भक्तों' की यही कामना, सारा जग सुखी हो जाये,
कर देना, सुखी कर देना, विश्वास लाया हूँ ॥ ४ ॥

॥ श्री श्याम चालीसा ॥

श्री गुरु चरण ध्यान धर, सुमरि सच्चिदानन्द
श्याम चालीसा भजत हूँ, रच चौपाई छन्द ॥

॥ चौपाई ॥

श्याम श्याम भजि बारम्बारा, सहजही हो भवसागर पारा ।
इस सम देव न दूजा कोई, दीन दयालु न दाता होई ॥
भीम सुपुत्र अहिलवति जाया, कहीं भीम का पौत्र कहाया ।
यह सब कथा सही कल्पान्तर, तनिक न मानो इसमें अन्तर ॥
बरबरीक विष्णु अवतारा, भक्तन हेतु मनुज तन धारा ।
बासुदेव देवकी प्यारे, जसुमति मैया नन्द दुलारे ॥
मधुसुदन गोपाल मुरारी बृज किशोर गोवर्धन धारी ।
सियाराम श्री हरि गोविन्दा, दीनपाल श्री बाल मुकुन्दा ॥
दामोदर रण छोड़ बिहारी, नाथ द्वारकाधीश खरारी ।
नर हरि रूप प्रह्लाद पियारा, खम्भ फाड़ि हिरणाकुश मारा ॥
राधा बल्लभ रुक्मणी कन्ता, गोपी बल्लभ कंस हनन्ता ।
मनमोहन चित्तचोर कहाये, माखन चोरि-चोरि कर खाये ॥
मुरलीधर यदुपति घनश्यामा, कृष्ण पतितपावन अभिरामा ॥
मायापति लक्ष्मीपति ईशा, पुरुषोत्तम केशव जगदीशा ।
विश्वेपते त्रैभुवन पसारा, दीनबन्धु भक्तन रखवारा ॥
प्रभु का भेद न कोई पाया, शेष महेश थके मुनिराया ।
नारद शारद रिषि योगेन्दर, श्याम-श्याम सब रटत निरंतर ॥
कवि कोविद करि सकै गिनन्ता, नाम अपार अथाह अनन्ता ।
हर सृष्टि हर युग में भाई, ले अवतार भक्त सुख दाई ॥
हृदय माहिं करि देखु विचारा, शाम भज ते हो निस्तारा ।
कीर पढ़ावत गणिका तारी, भीलनी की भक्ति बलिहारी ॥
सती अहिल्या गौतम तारी, भई श्राप बस शिला दुखारी ।
श्याम चरण रज में चितलाई, पहुँची पति लोक में जाई ॥
अजामिल अरु सदन कसाई, नाम प्रताप परम गति पाई ।

जाके श्याम नाम अधारा, सुख लहहि दुख दूर हो सारा ॥
 श्याम सलोना है अति सुन्दर, मोर मुकुट सिर तनु पिताम्बर ।
 गल बैजन्ती माला सुहाई, छवि अनुप भक्तन मन भाई ॥
 श्याम-२ सुमिर हुं दिन राती, शाम दुपहरि अरु परभाती ।
 श्याम सारथि जिसके रथ के, रोड़े दूर होय उस पथ के ॥
 श्याम भगत न कहीं पर हारा, भीर परी तब श्याम पुकारा ।
 रसना श्याम नाम रस पीले, जीले श्याम के नाम के हिले ॥
 संसारी सुख भोग मिलेगा, अन्तर श्याम सुखयोग मिलेगा ।
 श्याम प्रभु हैं तन के काले, मन के गोरे भोले भाले ॥
 श्याम संत भक्तन हितकारी, रोग दोष अधनाशे भारी ।
 प्रेम सहित जे नाम पुकारा, महावीर लगत श्याम को प्यारा ॥
 खादू में हैं मथुरा वासी, पार ब्रह्म पूरन अविनाशी ।
 सुधातान भरी मुरली बजाई, दिल्ली प्रान्त जहां सुनी पाई ॥
 वृद्ध बाल जेते नारी नर, मुग्ध भये सुन बंशी के स्वर ।
 हर बर कर बहुँचे सब जाई, खादू में जहाँ श्याम कन्हाई ॥
 जिसने श्याम सुरुप निहारा, भव भय से पावे छुटकारा ॥

॥ दोहा ॥

श्याम सलोने सांवरे, बरबरीक तनु धार ।
 इच्छा पूरन भक्त की, करो न लाओ वार ॥

॥ दोहा ॥

शुक्ल पक्ष एकादशी, करो रात भरि जाग ।
 श्री श्याम गुण गाइये, दुख जायें सब भाग ॥

भोरे होत अस्नान करि, ज्योति करहु धरि ध्यान ।
 भोग लगाओ श्याम के होय महा कल्याण ॥
 अणतु राम उपनाम है, कह सब पवन कुमार ।
 श्याम भक्त जग में जिते, उनको करुँ प्रणाम ॥

जय श्री श्याम ! जय श्री श्याम !! जय श्री श्याम !!!

॥ श्री गणेश जी की आरती ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।

एक दन्त दयावन्त, चार भुजाधारी ।
माथे पे सिन्दूर सोहे, मुसे की सवारी ॥ जय ... ॥

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ जय... ॥

पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा,
लड्डुअन का भोग लागे, सन्त करे सेवा ॥ जय... ॥

दीनन की लाज राखो शम्भू-सुत वारी ।
कामना को पूरा करो जायें बलिहारी ॥ जय० ॥

॥ आरती श्रीलक्ष्मी जी की ॥

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ ॐ ॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग-माता ।
सूर्य-चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥

दुर्गारूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋधि-सिद्धि-धन पाता ॥ ॐ ॥

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता ॥ ॐ ॥

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॐ ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पानका वेभव सब तुमसे आता ॥ ॐ ॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि -जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ॥ ॐ ॥

महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ ॥

॥ श्री जगदीश जी की आरती ॥

ॐ जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे ॥ ॐ जय ॥
जो ध्यावै फल पावे, दुःख बिन सै मन का ।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का ॥ ॐ जय ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ जय ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ जय ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।
किस बिधि मिलूँ दयामय, मैं तुमको कुमती ॥ ॐ जय ॥
दीनबन्धु, दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
करुणा हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ जय ॥
तन, मन, धन न्यौछावर, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ जय ॥
पुरण ब्रह्म की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत “शिवानन्द स्वामी”, सुख सम्पत्ति पावे ॥ ॐ जय ॥

॥ श्री शिवजी की आरती ॥

ॐ कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा बसन्तं हृदयार वृन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥

शीश गंग अर्द्धग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी ।

नन्दी भृङ्गी नृत्य करत है, गुण भक्तन शिव के दासी ॥

शीतल मंद सुगन्ध पवन बहे, जहाँ बैठे शिव अविनाशी ।

करत गान गन्धर्व सप्त स्वर, राग रागिनी अतिगासी ॥

यक्ष रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी ।

कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुन्जासी ॥

कल्पपद्म अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी ।

कामधेनु कोटिक जहाँ डोलत, करत फिरत है भिक्षासी ॥

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त भव के वासी ॥

छहों तो ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प चढ़त हैं वर्षासी ॥

देव मुनि जन की भीड़ पड़त हैं, निगम रहत जो नित गासी ॥

ब्रह्म विष्णु जाको ध्यान धरत, है कछु शिव हमको फरमासी ॥

ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखरासी ।

जिनको सुमिरण सेवा करता, दूट जाय यम की फांसी ॥

त्रिशूलधरजी को ध्यान निरन्तर, मना लगाय कर जो गासी ।

दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म जन्म शिव पद पासी ॥

कैलाशी काशी के वासी बाबा, अविनाशी मेरी सुध लीज्यो ।

सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान दरश दीज्यो ॥

आप तो प्रभुजी सदा सयाने, अवगुण मेरो सब ढकियो ।

सब अपराध क्षमाकर शंकर, किंकर की विनती सुनियो ॥

अभय दान दीजे प्रभु मुझको, सकल सृष्टि के हितकारी ।

भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव दुःखहारी ॥

काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो ।

नमामी शंकर भवानी भोलेबाबा, हर हर शंकर आप शरणम् ॥

॥ श्री हनुमान जी की आरती ॥

आरती कीजै हनुमान ललाकी, दुष्ट दलन रघुनाथ कलाकी ॥

जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ॥

अंजनिपुत्र महाबलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ॥

लंका-सी कोटि समुद्र-सी खाई, जात पवन सुत बार न लाई ॥

लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज संवारे ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, आनि संजीवन प्राण उबारे ॥

पैठि पाताल तोरि यम कातर, अहिरावण की भुजा उखारे ॥

बायें भुज सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब संत उबारे ॥

सुर नर मुनि जन आरती उतारे, जय-जय-जय हनुमानजी उचारे ॥

कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अंजनी माई ॥

जो हनुमानजी की आरति गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे ॥

लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ॥

आरती कीजै हनुमान ललाकी, दुष्ट दलन रघुनाथ कलाकी ॥

॥ जय बजरंग बली महाराज की जय ॥

॥ आरती श्री राम जन्म ॥

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला, कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी, अद्भुत रूप बिचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा, निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला, शोभा सिंधु खरारी ॥

कह दुई कर जोरी स्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनंता ।
माया गुण ग्याना तीत अमाना, वेद पुरान भनंता ॥

करुणा सुख सागर सब गुण आगर, जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी, भयऊ प्रगट श्रीकंता ॥

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया, रोम-रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला, यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना, होई बालक सुर भूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

॥ श्री दुर्गा जी की आरती ॥

जय अम्बे गौरी, मैया जै मंगल मूर्ती,
मैया जै आनन्द करणी ।

तुमको निशि दिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ टेर ॥

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मद को ।

उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे ॥

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ।

रक्त पुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे ॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ।

सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे ॥

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।

कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे ॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।

धुम्र विलोचन नैना, निशि दिन मदमाती ॥ जय अम्बे ॥

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।

मधुकैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे ॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमलारानी,

आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे ॥

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरुँ ।

बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरुँ ॥ जय अम्बे ॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।

भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे ॥

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।

मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ जय अम्बे ॥

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।

(श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे ॥

श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै ।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ॥ जय अम्बे ॥

॥ आरती राणी सती जी की ॥

ॐ जय श्री राणी सतीजी मैया, जय जगदम्ब सतीजी ।
अपने भक्त जनन की, दूर करो विपती ॥ ॐ जय

अवनि अनन्तर ज्योति अखण्डित, मण्डित चहुँ कुकुँभा ।
दुर्जन दलन खड्ग सी विद्युत सम प्रतिभा ॥ ॐ जय

मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे ।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ॥ ॐ जय

घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग घुरे ।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ॥ ॐ जय

सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरें ।
विविध प्रकार के व्यंजन, व श्रीफल भेंट करे ॥ ॐ जय

संकट विकट विदारिणी, नाशनि हो कुमति ।
सेवक जन हृदि पटले, मृदुल करन सुमति ॥ ॐ जय

अमल कमल दल लोचनि, मोचनि त्रय तापा ।
दास आयो शरण आपकी, लाज राखो माता ॥ ॐ जय

या मैयाजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
सदन सिद्धि नव निधि, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय

॥ आरती कुंजबिहारी जी की ॥

आरती कुंजबिहारी की । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥ (टेक)

गलेमें बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।

श्रवनमें कुण्डल झलकाला,

नंदके आनंद नंदलाला ॥ श्रीगिरिधर० ॥

गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,

लतनमें ठाढ़े बनमाली,

भ्रमन-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसै,

गगन सों सुमन रासि बरसै,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,

स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनु, बज रही बृन्दाबन बेनु,

चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,

हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन भिखारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।
आरती कुंजबिहारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ॥

॥ श्री साँवरिया सेठ की आरती ॥

साँवलसा गिरधारी भला हो रामा साँवलसा गिरधारी,
हरि बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, कुण्डल की छवि न्यारी । भला हो रामा,
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

लटपट पाग केशरिया जामा, हिवड़े रो हार हजारी । भला हो रामा ।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

वृन्दावन में गडवाँ चरावे, बंशी बजावे गिरधारी । भला हो रामा ।।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

वृन्दावन में रास रचायो, सहस्र गोप्यों रो गिरधारी । भला हो रामा ।
हर बिना मोरि, पाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

छप्पन भोग छतीसों व्यंजन रुच रुच भोग लगावो । भलो हो रामा ।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

इन्द्र कोप कियो बृज ऊपर, नख पर गिरवरधारी । भला हो रामा ।।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

और न को तो नहीं भरोसो, हमको तो आस तिहारि । भला हो रामा ।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

बाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहारी । भला हो रामा ।
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

साँवलसा गिरधारी, ओ भरोसा भारी, ओ शरण तिहारी,
ओ लज्जा हमारी, ओ गिरवरधारी, ओ कुंजबिहारी, ओ नटवरनारी,
हर बिना मोरि, गोपाल बिना मोरि, साँवल सेठ बिना मोरि ।।कौन ।।

॥ श्री श्याम जी की आरती ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे,
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ ॐ जय श्री ॥

रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर धुरे,
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ ॐ जय श्री ॥

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे,
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ ॐ जय श्री ॥

मोदक खीर चूरमा, सूवरण थाल भरे,
सेवक भोग लगावे, सेवा नित्य करे ॥ ॐ जय श्री ॥

झाँझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे,
भक्त आरती गावे, जय जयकार करे ॥ ॐ जय श्री ॥

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे,
सेवक जन निज मुख से, श्याम श्याम उचरे ॥ ॐ जय श्री ॥

श्री श्याम बिहरी जी की आरती, जो कोई नर गावे,
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाँछित फल पावे ॥ ॐ जय श्री ॥

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे,
निज भक्तों के तुमने, पूरन काज करे ॥ ॐ जय श्री ॥

॥ श्री श्याम पुष्पांजली ॥

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुणज्यो चित्त लगाय ।
दास आ गयो शरण में, रखियो इसकी लाज ॥

धन्य दुँढारो देश है, खाटू नगर सुजान ।
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ॥

श्याम श्याम मैं रटूँ, श्याम है जीवन प्राण ।
श्याम भक्त जग में बड़े, उनको करूँ प्रणाम ॥

खाटू नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम ।
फागुन शुक्ला मेला भरे, जय जय बाबा श्याम ॥

फागुन शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ॥

उमापति लक्ष्मीपति, सीतापति श्री राम ।
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के श्री श्याम ॥

पान सुपारी ईलाइची, अत्तर सुगन्ध भरपूर ।
सब भक्तन की विनती दर्शन देवों हजुर ॥

“आलूसिंह” जी तो प्रेम से, धरे श्याम को ध्यान ।
“श्याम लिओ परिवार” पावे सदा, श्याम कृपा से मान ॥